संस्थापक : श्रद्धेय राकेश भारद्वाज | समूह संपादक : रवि भारद्वाज | देहरादून, गुरुवार, 14 दिसंबर 2023 ₹ 1 | www.actionindialive.com | facebook.com/actionindialive

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

एक्शन इंडिया

वर्ष: 14 अंक: 333 पृष्ठ: 08 | RNI : UTTHIN/2009/31653

actionindiaddn@gmail.com | उत्तराखण्ड संस्करण | दिल्ली - हरियाणा - हिमाचल प्रदेश - उत्तराखण्ड

अमित शाह संसद भवन परिसर में 2001 में संसद हमले में शहीद हुए बहादुर सुरक्षा कर्मियों को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए।

फास्ट न्यूज

भजनलाल शर्मा 15 दिसम्बर को लेंगे मुख्यमंत्री पद की शपथ

जयपुर। राजस्थान के मनोनीत मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा 15 दिसंबर को जयपुर के ऐतिहासिक अल्बर्ट हॉल में सुबह सवा ग्यारह बजे शपथ लेंगे। इस शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा को आमंत्रण भेजा जाएगा। इसके अलावा कार्यक्रम के लिए भाजपा शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों को निमंत्रण भेजा जा रहा है। प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ ने बुधवार को बताया कि मनोनीत मुख्यमंत्री भजनलाल के साथ दोनों उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी और प्रेम चंद बैरवा भी शपथ लेंगे। 15 दिसंबर को ही भजनलाल शर्मा का जन्मदिन भी है। शपथ से पहले भजनलाल गिरिराज महाराज के दर्शन करने के लिए भरतपुर भी जाएंगे। शपथ ग्रहण समारोह को लेकर प्रदेश भाजपा कार्यालय में हुई बैठक के बाद इस समारोह को लेकर अलग-अलग नेताओं की जिम्मेदारियां तय की गई।

भारत ने ओआईसी के बयान को सिरे से किया खारिज

नई दिल्ली। भारत ने अनुच्छेद-370 को लेकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर सवाल उठाने वाले इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के महासचिव के बयान को सिरे से खारिज कर दिया है। सरकार ने इसे गलत जानकारी और गलत इरादे से दिया गया बयान बताया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने ओआईसी के बयान के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराया है। प्रवक्ता ने पाकिस्तान का जिक्र किए बिना कहा कि ऐसा मानवाधिकारों के सिलसिलेवार उल्लंघनकर्ता और सीमा पार आतंकवाद को प्रोत्साहित करने वाले के इशारे पर हो रहा है। इससे ओआईसी पर ही सवाल उठते हैं। इस तरह के बयान केवल ओआईसी की विश्वसनीयता को कमजोर करते हैं। ओआईसी 57 इस्लामिक देशों का संगठन है। ओआईसी का कहना है कि 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर को दिया गया विशेष दर्जा हटाने का फैसला पलटा जाए। साथ ही उसने कहा है कि जम्मू-कश्मीर के लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार है। संगठन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आह्वान किया है।

कैसे हुई संसद की सुरक्षा में बड़ी चूक?

= दो शख्स कूदे, जूते से कुछ निकाला और धुआं फैलने लगा, दो ने संसद के बाहर किया बवाल

बड़ी चूक

8 संसद की सुरक्षा में हुई बड़ी चूक, लोकसभा की कार्यवाही के दौरान बुधवार को दर्शक दीर्घा से दो शख्स नीचे कूद गए।

टीम एक्शन इंडिया/नई दिल्ली

संसद पर हमले की बरसी के दिन ही वहां सुरक्षा में बड़ी चूक का मामला सामने आया है। लोकसभा की कार्यवाही के दौरान बुधवार को दर्शक दीर्घा से दो शख्स नीचे कूद गए। सांसदों ने दोनों शख्स को घेर लिया। लोकसभा की सुरक्षा में लगे मार्शल भी तुरंत दौड़कर आए और दोनों को पकड़ लिया। इससे कुछ देर पहले दो लोग संसद के बाहर प्रदर्शन करते दिखे। इनमें से एक महिला भी थी। इनके हाथ में कलर गैस था। दोनों ने बाहर इसका छिड़काव किया। दोनों को सुरक्षाकर्मियों ने हिरासत में ले लिया। अब यह बात भी सामने आ रही है कि चारों एक-दूसरे को जानते थे।

यह घटना बुधवार दोपहर एक बजकर एक मिनट पर हुई। लोकसभा में पीठासीन अधिकारी राजेंद्र अग्रवाल शून्य काल की कार्यवाही को संचालित कर रहे थे। मालदा उत्तर से भाजपा सांसद खगेन मुर्मू अपनी बात रख रहे थे। तभी दो शख्स दर्शक दीर्घा से नीचे कूद गए।

नीले रंग की जैकेट पहना एक युवक शख्स सांसदों की सीट पर कूदने लगा। वह लगभग तीन कतार लांघकर आसन की तरफ जाने लगा। अफरा-तफरी के माहौल के बीच कुछ सांसदों ने हिम्मत दिखाकर उसे घेर लिया। मार्शल भी दौड़कर आ गए। तभी उस युवक ने जूते के अंदर से कुछ पदार्थ निकाला। बाद में सांसदों और मार्शलों ने मिलकर दोनों को पकड़ लिया। इसके बाद पीठासीन अधिकारी ने कार्यवाही स्थगित कर दी।

सांसद के मेहमान के तौर पर आया था शख्स: बताया जा रहा है कि दर्शक दीर्घा में कूदे दो शख्स में से एक मैसूर के सांसद के मेहमान के तौर पर संसद पहुंचा था। उसका नाम सागर बताया जा रहा है। बसपा से निष्कासित सांसद दानिश अली ने भी बताया कि पकड़े गए एक युवक का नाम सागर है। बता दें कि मैसूर से प्रताप सिम्हा भाजपा सांसद हैं।

नारे लगा रहे थे युवक: बसपा सांसद मलूक नागर ने बताया कि उनकी सीट के बगल में ही अचानक एक युवक दर्शक दीर्घा से कूद गया।

पीठासीन : राजेन्द्र अग्रवाल

छह लोगों के शामिल होने का संदेह | चार गिरफ्तार, दो की तलाश जारी | सभी गुरुग्राम में ठहरे थे, एक-दूसरे को जानते हैं

छह लोगों ने मिलकर रची थी पूरी साजिश, गुरुग्राम में रुके थे सभी, दो अभी भी फरार

नई दिल्ली : बुधवार को संसद भवन की सुरक्षा में बड़ी चूक देखने को मिली। सुरक्षा घेरा तोड़कर लोकसभा में विजिटर गैलरी से दो संदिग्ध कूद पड़े। संसद की कार्यवाही के दौरान दोनों शख्स बेंच पर चढ़कर कूदने लगे। जिसके बाद वहां अफरातफरी का माहौल बन गया। आनन-फानन में सुरक्षाकर्मी दौड़े और दोनों आरोपियों को पकड़ लिया गया। सांसदों ने दोनों शख्स को घेर लिया। लोकसभा की सुरक्षा में लगे मार्शल भी तुरंत दौड़कर आए और दोनों को काबू में लिया गया। वहीं, संसद भवन के आरोपियों की संख्या छह बताई जा रही है, यह सब लोग गुरुग्राम में रुके थे। पुलिस सूत्रों ने कहा कि दिल्ली पुलिस को संसद की सुरक्षा उल्लंघन के मामले में पकड़े गए चार लोगों के साथ दो और लोगों की संलिप्तता का संदेह है। उन्होंने दावा किया कि सभी छह एक-दूसरे को जानते थे और गुरुग्राम में एक घर में रह रहे थे। गिरफ्तार लोगों के पास से कोई मोबाइल फोन बरामद नहीं हुआ है, पूछताछ जारी है। दिल्ली पुलिस संसद सुरक्षा उल्लंघन मामले में शामिल चार आरोपियों के मोबाइल फोन की तलाश कर रही है। अमोल शिंदे और नीलम संसद के बाहर पकड़े गए और सागर शर्मा और मनोरंजन डी लोकसभा कक्ष के अंदर पकड़े गए। जो पुलिस की गिरफ्त में हैं। दो अन्य की तलाश की जा रही है, जिनकी पहचान ललित और विक्रम के रूप में हुई है साथी होने का संदेह है।

76 कानूनों को निरस्त करने वाले विधेयक को संसद की मंजूरी

नई दिल्ली : संसद के शीतकालीन सत्र के आठवें दिन निरसन और संशोधन विधेयक, 2023 को राज्यसभा में डेस्क थपथपाकर पारित कर दिया। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने इस विधेयक पर बोलते हुए कहा कि यह कदम जीवन और व्यापार करने में आसानी में सुधार के उसके निरंतर प्रयासों का हिस्सा है। बता दें कि इस विधेयक में 76 निरर्थक और अप्रचलित कानूनों को निरस्त करने के लिए प्रावधान किया गया है।

पुलिस की लापरवाही या इंटेलिजेंस चूक, कहां गायब हो गई सादे कपड़ों वाली टीम

संसद के भीतर हुई घटना के बाद केंद्रीय गृह सचिव, आईबी, रॉ, दिल्ली पुलिस, सीआरपीएफ, आईटीबीपी और स्पेशल सैल के शीर्ष अफसर मौके पर पहुंच गए हैं। घटना की प्रारंभिक जांच शुरू हो गई है। फोरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंच चुकी हैं। इस मामले में पुलिस की लापरवाही या इंटेलिजेंस चूक, इस पर रार मच गई है। सुरक्षा बल से जुड़े सूत्रों का कहना है कि इस मामले की जांच के बाद पता चलेगा कि असल कोताही किसकी है। अगर कोई व्यक्ति कैप्सूल लेकर संसद में घुसा है तो उस दौरान गेटों पर कौन से सुरक्षा कर्मी मौजूद थे। सपा के सांसद राम गोपाल यादव ने एक बड़ा खुलासा किया है। उनका कहना था कि पहले सदन के बाहर, भीतर और गैलरी के अलावा संसद के चप्पे चप्पे पर सादे कपड़ों में जवान मौजूद रहते थे। उनकी नजर सभी पर रहती थी। अब वह टीम गायब हो गई है। बतौर राम गोपाल यादव, सादे कपड़ों में इंटेलिजेंस के आदमी होते थे। अब वे लोग कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे। नए संसद भवन को तो और भी अधिक सुरक्षित बताया गया था। बता दें कि संसद की सुरक्षा के लिए कई बलों को तैनात किया गया है।

'पुणे लोकसभा सीट पर तुरंत कराएं उपचुनाव'

टीम एक्शन इंडिया/मुंबई

बॉम्बे हाईकोर्ट ने पुणे लोकसभा सीट पर उपचुनाव न कराने को लेकर चुनाव आयोग के रूख पर कड़ी आपत्ति जताई है। कोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए पुणे लोकसभा सीट पर तत्काल उपचुनाव कराने के चुनाव आयोग को निर्देश दिए हैं। इस दौरान कोर्ट ने कहा कि निर्वाचन क्षेत्र के लोगों को लंबे समय तक प्रतिनिधित्व से वंचित नहीं किया जा सकता है। न्यायमूर्ति गौतम पटेल और न्यायमूर्ति कमल की खंडपीठ ने 2024 के लोकसभा चुनावों की तैयारी सहित अन्य चुनावों में व्यस्त होने के चुनाव आयोग के कारण की जमकर आलोचना की। कोर्ट ने इसे विचित्र और पूरी तरह से अनुचित करार दिया। बता दें मार्च माह में भाजपा सांसद गिरीश बापट के निधन के बाद पुणे लोकसभा सीट खाली हो गई थी। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि संसदीय लोकतंत्र में शासन निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है, क्योंकि वह लोगों की आवाज है। अब क्षेत्र में प्रतिनिधि ही नहीं तो उन स्थानीय लोगों की आवाज कौन उठाएगा।

मोदी की मौजूदगी में विष्णुदेव साय ने ली मुख्यमंत्री पद की शपथ

विष्णुदेव छत्तीसगढ़ के चौथे मुख्यमंत्री, अरुण साव और विजय शर्मा बने डिप्टी सीएम, शपथ ग्रहण के बाद साय ने मंत्रालय पहुंचकर कार्यभार संभाला

टीम एक्शन इंडिया/रायपुर

छत्तीसगढ़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में विष्णुदेव साय ने बुधवार को मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है। इसी के साथ विष्णुदेव साय छत्तीसगढ़ के चौथे मुख्यमंत्री बन गए हैं। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने इस मौके पर छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री के रूप में अरूण साव एवं विजय शर्मा को भी पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, केन्द्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री रामदास अठावले, राज्यसभा सांसद जेपी नड्डा, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा विशेष रूप से मौजूद थे। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने इस मौके पर छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री के रूप में अरूण साव एवं विजय शर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह एवं भूपेश बघेल, पूर्व उप मुख्यमंत्री टी.एस. सिंहदेव, पूर्व सांसद ओम माथुर सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्य सचिव अमिताभ जैन ने किया।

शपथ ग्रहण

8 छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री के रूप में अरूण साव एवं विजय शर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

डॉ. मोहन यादव बने मध्य प्रदेश के 19वें मुख्यमंत्री

टीम एक्शन इंडिया/भोपाल

डॉ. मोहन यादव मध्य प्रदेश के 19वें मुख्यमंत्री बन गए हैं। बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने राजधानी भोपाल के मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित समारोह में उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही राज्यपाल पटेल ने जगदीश देवड़ा और राजेंद्र शुक्ल को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह में नवनिर्वाचित विधायक, भाजपा पदाधिकारी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता, स्वयंसेवक और आम नागरिक उपस्थित थे। शपथ ग्रहण समारोह में केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह, केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और केन्द्रीय नागरिक विमानन और इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया मौजूद थे। समारोह में कई राज्यों के मुख्यमंत्री शामिल हुए जिसमें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह, नागालैंड के मुख्यमंत्री नेफ्यू रियो, मेघालय के मुख्यमंत्री कोंराड संगमा, महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस व अजीत पवार एवं नागालैंड के उप मुख्यमंत्री वाय. पैटन शामिल हुए। इसके साथ ही राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, पूर्व केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल, पूर्व मंत्री समारोह में मौजूद रहे।

किसानों से चयनित स्थान पर करें धान क्रयः आर्या

मंत्री आर्या ने कहा

8 प्रदेश में धान क्रय को लेकर केन्द्र सरकार की और 08 लाख 30 हजार मीट्रिक टन का लक्ष्य दिया गया था

देहरादून/टीम एक्शन इंडिया
मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि किसानों को धान विक्रय करने में किसी तरह की परेशानी न हो और किसानों को उनके ओर से चयनित स्थानों पर ही क्रय केन्द्र उपलब्ध कराया जाएं। अब तक 06 लाख 39 हजार 259 मीट्रिक टन का धान क्रय किया गया है।
बुधवार को विधानसभा भवन स्थित सभागार कक्ष में खाद्य मंत्री रेखा आर्या ने राज्य के सभी क्रय केन्द्रों में धान क्रय, मंडुवा क्रय की अद्यतन स्थिति लक्ष्यवार आवंटन, क्रय एवं भुगतान के

संबंध में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा की।
मंत्री आर्या ने कहा कि प्रदेश में धान क्रय को लेकर केन्द्र सरकार की और 08 लाख 30 हजार मीट्रिक टन का लक्ष्य दिया गया था,जिसके सापेक्ष 06 लाख 39 हजार 259 मीट्रिक टन का धान क्रय किया गया है। उन्होंने कहा कि शेष लक्ष्य को 31 दिसम्बर तक पुरा करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए। साथ ही क्रय करने वाली एजेन्सियों को भी ससमय अपने लक्ष्य को करने के लिए इसपर गम्भीरता से कार्यवाही करने को कहा।
मंत्री ने बताया कि धान क्रय करने वाली 06 संस्थाओं में खाद्य विभाग की ओर से 65 प्रतिशत, यूसीएफ द्वारा 87 प्रतिशत, एनसीसीएफ द्वारा 17 प्रतिशत, यूसीसीएफ 57 प्रतिशत, यूपीसीयू 79 प्रतिशत और कमीशन ऐजेन्ट (कच्चा आढ़ती) 78 प्रतिशत का धान क्रय किया गया है, जोकि सम्पूर्ण लक्ष्य के लगभग 77 प्रतिशत है।
उन्होंने बताया कि एनसीसीएफ की ओर से दिये गये लक्ष्य को पूर्ण न कर पाने के कारण एनसीसीएफ के लक्ष्य को निरस्त कर अन्य ऐजेन्सियों में समायोजित करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। उन्होंने यूपीसीयू के माध्यम से क्रय किये जाने वाले धान के भुगतान में मिल रही शिकायतों के कारण अधिकारियों को रिपोर्ट तैयार कर भुगतान में पारदर्शिता लाने के लिए निर्देश दिये।
उन्होंने विभाग की ओर से किसानों को किये जाने वाले भुगतान की भी समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि किसानों और क्रय केन्द्रों के शेष भुगतान के संबंध में रिपोर्ट तैयार की जाए जिससे किसानों को ससमय भुगतान किया जा सके।
उन्होंने बताया कि राज्य में मंडुआ क्रय के लिए खाद्य विभाग द्वारा यूसीसीएफ को नामित किया गया है जिसके द्वारा लगभग 16 हजार मीट्रिक टन लक्ष्य के सापेक्ष लगभग 1313 कुन्तल मंडुआ क्रय किया गया है तथा किसानों को इसके सापेक्ष पूर्ण भुगतान भी किया जा चुका है।
खाद्य मंत्री ने बायोमैट्रिक व्यवस्था को और दुरूस्त करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि इससे संबंधित टैण्डर प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूर्ण किया जाए। उन्होंने राशन डीलरों के शेष दो माह के भुगतान को भी जल्द से जल्द पूर्ण करने का आश्वासन दिया। उन्होंने 72 घण्टे में किये जाने वाले भुगतान की पॉलिसी को अमल में लाने के लिए भी अधिकारियों को निर्देशित किया।
इस मौके पर सचिव, खाद्य, एल. फनई, अपर सचिव, खाद्य, रूचि मोहन रयाल, अपर आयुक्त, खाद्य, पी.एस. पांगती, संयुक्त आयुक्त, खाद्य, महेन्द्र सिंह बिसेन तथा अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

श्रीद्धि और लावण्या की जोड़ी ने बैडमिंटन में जीता स्वर्ण पदक

बधाई

8 दोनों खिलाड़ियों के इस प्रदर्शन के लिए उनके कोच गौरव नयाल तथा अनिल गड़िया ने उन्हें बधाई दी है,

नैनीताल/टीम एक्शन इंडिया
हल्द्वानी के मिनी स्टेडियम में आयोजित हुये जनपद स्तरीय खेल महाकुंभ-2023 में नैनीताल के डीएसए बैडमिंटन कोर्ट में प्रशिक्षण ले रही दो बैडमिंटन खिलाड़ियों ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।
अंडर-19 आयु वर्ग में नगर के मोहन लाल साह बाल विद्या मंदिर की छात्राओं श्रीद्धि बिष्ट और लावण्या रावत की जोड़ी ने हल्द्वानी की पार्थी और चेतना को हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम करने के साथ ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए अपनी जगह पक्की कर ली है। दोनों खिलाड़ियों के इस प्रदर्शन के लिए उनके कोच गौरव नयाल तथा डीएसए महासचिव अनिल गड़िया ने उन्हें बधाई दी है, और राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पदक लाने की उम्मीद जताई है।

एनएसई सोशल स्टॉक एक्सचेंज में आशीषकुमार चौहान की उपस्थिति में हुई भारत की पहली लिस्टिंग

देहरादून/टीम एक्शन इंडिया
एनएसई सोशल स्टॉक एक्सचेंज में आज भारत की पहली लिस्टिंग आशीषकुमार चौहान (प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) की उपस्थिति में हुई और इस मौके पर डॉ. आर बालासुब्रमण्यम (अध्यक्ष, सलाहकार समिति, सोशल स्टॉक एक्सचेंज, सेबी), रमेश स्वामी (संस्थापक निदेशक, उन्नति), अश्वनी भाटिया (पूर्णकालिक सदस्य, सेबी) तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति अपने आज के एनएसई दौरे के दौरान मौजूद रहे।

1967 बैच के पूर्व छात्रों के साथ मनायी गयी सैनिक स्कूल की स्वर्ण जयंती

समारोह

8 स्वर्ण जयंती समारोह कार्यक्रमकी शुरूआत शक्ति स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई

नैनीताल/टीम एक्शन इंडिया
नैनीताल जनपद के घोड़ाखाल स्थित सैनिक स्कूल का स्वर्ण जयंती समारोह विद्यालय के 1967 बैच के पूर्व छात्रों के साथ मनाया गया। समारोह में 1967 बैच के 17 पूर्व छात्रों ने हिस्सा लिया।
कार्यक्रम की शुरूआत शक्ति स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई, जिसके बाद भव्य

बैंड डिस्प्ले का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान दिवंगत हो चुके पूर्व छात्रों व शिक्षको के लिये दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी। पूर्व छात्रों ने 9 बार रक्षा मंत्री ट्रॉफी जीतने पर विद्यालय को बधाई व शुभकामनाएं भी दीं।
रत्नदीप सभागार में आयोजित कार्यक्रम में मेजर जनरल जीपी सिंह ने प्रधानाचार्य ग्रुप कैप्टन वीएस डंगवाल व उनकी पत्नी श्वेता डंगवाल के साथ पूर्व छात्रों एवं 50 वर्ष पूर्व विद्यालय में शिक्षण करने वाले एचसी पांडेय व पीसी राणा का शॉल भेंट कर स्वागत व अभिनंदन किया। इस दौरान विद्यालय के छात्रों ने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर समा बांध दिया वहीं इन्हें देख कर पूर्व छात्र बेहद भावुक नजर आये। संचालन भारतीय सेना के कर्नल ज्योतिर्मय घोषाल ने किया।
समारोह में कर्नल अखिल गुप्ता, ब्रिगेडियर कुलवंत सिंह, डॉ. डीपीएस रेखी, मेजर जनरल जीपी सिंह, कर्नल जेएस मनराल, बीएस राणा, कर्नल राजेश सकलानी, राजेंद्र सनवाल, ब्रिगेडियर प्रवीण जोशी, परमबीर सिंह, कर्नल अखिलानंद पांडे, कर्नल अशोक पाठक, कर्नल दिव्य प्रकाश, कर्नल विक्रम निम, कर्नल जावेद हुसैन, कर्नल ज्योतिर्मय घोषाल, मोहन बिष्ट, ब्रिगेडियर कुलवंत सिंह, ब्रिगेडियर प्रवीण जोशी व बुद्धि सिंह राणा आदि मौजूद रहे।

गढ़वाल के चार दिवसीय दौरे पर मंत्री धन सिंह रावत

देहरादून/टीम एक्शन इंडिया
मंत्री डॉ. धन सिंह रावत गढ़वाल मंडल के चार दिवसीय दौरे पर हैं। इस दौरान डॉ. रावत अपनी विधानसभा क्षेत्र के चार स्थानों पर विकसित भारत संकल्प यात्रा में प्रतिभाग कर आम लोगों को भारत सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। इसके अलावा वह विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण भी करेंगे।
मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मीडिया को जारी बयान में बताया कि वह 13 दिसम्बर से लेकर 16 दिसम्बर तक गढ़वाल मंडल के दौरे पर रहेंगे। चार दिवसीय भ्रमण के दौरान वह अपनी विधानसभा क्षेत्र में विकसित भारत संकल्प यात्रा की अगुवाई करेंगे। यात्रा के माध्यम से वह क्षेत्र के कोटली, सिमखेत, सांकरसैंण एवं मरखोला में आम लोगों को भारत सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं की विस्तृत जानकारी देंगे। उन्होंने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना है ताकि उसे राष्ट्रीय योजनाओं यथा पक्का मकान, नल जल कनेक्शन, शौचालय, निःशुल्क इलाज, निःशुल्क राशन, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, बैंक खाता खुलवाने, पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम फसल बीमा योजना, पीएम स्वनिधि योजना और प्रधानमंत्री स्वामित्व संपत्ति कार्ड के तहत मिलने वाले लाभ के बारे में जानकारी दी जा सके।
अपने गढ़वाल भ्रमण के दौरान गुरुवार को डॉ. रावत श्रीनगर विधानसभा क्षेत्र के मरखोला में चाकीसैंण-जाख रोड़, चाकीसैंण-मरखोला-बांजकोट मोटरमार्ग डामरीकरण का शिलान्यास करेंगे। इसके उपरांत वह मरखोला में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में प्रतिभाग करेंगे। इसे अलावा डॉ. रावत चाकीसैंण में राजकीय प्राथमिक विद्यालय के सौन्दर्यीकरण कार्यों का शिलान्यास तथा राजकीय स्वास्थ्य केन्द्र के मरम्मत कार्यों एवं यूपीसीएल के 33 केबी सब स्टेशन का लोकार्पण करेंगे। इसके बाद वह चौंरा में राजकीय इंटर कॉलेज के भवन तथा आंताखोली में राजकीय प्राथमिक विद्यालय आंताखोली के मरम्मत कार्यों व राजकीय प्राथमिक विद्यालय खरकासारी के नवीन भवन का शिलान्यास करेंगे।

पुलिस ने दबोचे सात वारंटी

हरिद्वार/टीम एक्शन इंडिया
वांछित आरोपितों की धरपकड़ के लिए एसएसपी के निर्देश पर चलाए जा रहे अभियान के तहत लक्सर कोतवाली पुलिस ने 7 वारंटियों को गिरफ्तार किया।
पुलिस ने आरोपितों को न्यायालय के समक्ष पेश किया। पकड़े गए आरोपितों के नाम नीरज पुत्र नन्दराम निवासी गदरजुड्डा थाना मंगलौर, नन्दराम पुत्र नत्थन निवासी गदरजुड्डा थाना मंगलौर, मिन्टू पुत्र आशाराम निवासी मुण्डाखेड़ा खुर्द थाना कोतवाली लक्सर, लोकी उर्फ लोकेश पुत्र इन्दर सिंह निवासी ग्राम पीतपुर थाना कोतवाली लक्सर, नसीर पुत्र वसीर निवासी ग्राम ऐथल थाना पथरी व संदीप पुत्र अजब सिंह निवासी सेठपुर कोतवाली लक्सर जनपद हरिद्वार बताए गए हैं।

तमंचे और कारतूस के साथ एक गिरफ्तार

पूछताछ

8 पूछताछ में आरोपित ने अपना नाम दानिश पुत्र मुजफ्फर निवासी घोडेवाला जिला हरिद्वार बताया।

हरिद्वार
सिडकुल थाना पुलिस ने तमंचे व जिंदा कारतूस के साथ एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित के खिलाफ जनपद के कई थानों में मुकदमे दर्ज हैं।
सिडकुल पुलिस ने चेकिंग के दौरान इन्द्रलोक कालोनी को जाने वाले तिराहे से एक आरोपित को तमंचे व जिंदा कारतूस के साथ

गिरफ्तार किया। पुलिस पूछताछ में आरोपित ने अपना नाम दानिश पुत्र मुजफ्फर निवासी घोडेवाला थाना बहादरबाद जिला हरिद्वार बताया। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसका चालान कर दिया है। आरोपित के खिलाफ बहादराबाद, कोतवाली गंगनहर एवं कोतवाली मंगलौर में मुकदमें दर्ज हैं। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसका चालान कर दिया है।

संत को जल्द से जल्द सकुशल बरामद करे पुलिस प्रशासनः पुरी

लापता

8 राजेंद्रदास ने कहा कि स्वामी पवित्र दास बुजुर्ग संत हैं। उनकी कुशलता को लेकर सभी संत चिंतित हैं।

हरिद्वार/टीम एक्शन इंडिया
अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद अध्यक्ष एवं श्री पंचायती अखाड़ा महानिवार्णी के सचिव श्रीमहंत रविंद्रपुरी महाराज ने संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हुए श्री पंच दिगम्बर अखाड़ा के बुजुर्ग संत स्वामी पवित्र दास महाराज का पता लगाने की मांग की है।
अखाड़ा परिषद अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्रपुरी महाराज ने कहा कि स्वामी पवित्र दास महाराज बैरागी कैंप में श्रीमद् भागवत कथा की तैयारियां कर रहे थे। 10 दिसम्बर से कथा का आयोजन किया जाना था, लेकिन उससे पहले ही संदिग्ध परिस्थितियों में उनके लापता हो जाने से संत समाज में चिंता व्याप्त है। उन्होंने कहा कि सरकार व पुलिस प्रशासन को बुजुर्ग संत को जल्द से जल्द सकुशल बरामद करना चाहिए।
अखाड़ा परिषद के महामंत्री एवं श्री पंच निमोर्ही अनी अखाड़ा के अध्यक्ष श्रीमहंत राजेंद्रदास महाराज ने कहा कि स्वामी पवित्र दास बुजुर्ग संत हैं। उनकी कुशलता को लेकर सभी संत चिंतित हैं। उन्होंने कहा कि स्वामी पवित्र दास महाराज के संयोजन में भव्य स्तर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जाने वाला था। कथा की लगभग सभी तैयारियां हो चुकी थी। ऐसे में अचानक उनका लापता हो जाना संदेह उत्पन्न कर रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री व डीजीपी को स्वामी पवित्र दास का पता लगाने के लिए विशेष टीम का गठन करना चाहिए।
अखाड़ा परिषद के कोषाध्यक्ष एवं श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल के कोठारी महंत जसविंदर सिंह, अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता महंत गौरीशंका दास, दिगम्बर अखाड़े के महामंत्री महंत वैष्णव दास, महामंडलेश्वर स्वामी हरिचेतनानंद, स्वामी रविदेव शास्त्री, महंत विष्णु दास, महंत रघुवीर दास, श्री रामानंदीय वैष्णव मंडल के अध्यक्ष महंत नारायण दास पटवारी, महंत रामानंद सरस्वती, स्वामी शिवानंद भारती आदि संतों ने भी सरकार व पुलिस प्रशासन से जल्द से जल्द स्वामी पवित्र दास को तलाश करने की मांग की है।
गौरतलब है कि दिगम्बर अखाड़े के बुजुर्ग संत स्वामी पवित्र दास 10 दिसम्बर से बड़े स्तर पर श्रीमद् भागवत कथा कराने की तैयारियों में जुटे हुए थे। कथा में देश के तमाम बड़े संतों को आर्मंत्रित किया गया था। कथा के आयोजन के लिए टेंट आदि भी लग चुके थे, लेकिन आयोजन से पूर्व 5 दिसम्बर को दो घंटे में लौटकर आने की बात कहकर

अवादा ने विद्यार्थियों को इंटरनेट का सुरक्षित प्रयोग करने की दी जानकारी

कार्यशाला

8 -कार्यशाला का उद्देश्य जीवन में आने वाली किसी भी चुनौती से निपटना : ऋतु पटवारी

ऋषिकेश/टीम एक्शन इंडिया
अवादा फाउंडेशन ने ऋषिकेश के दो विद्यालयों, भरत मंदिर इंटर कॉलेज और सरस्वती विद्या मंदिर आवास विकास ऋषिकेश में कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों के लिए विशेष साइबर सिक्योरिटी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को डिजिटल दुनिया में सुरक्षा के लिए

आवश्यक सावधानियां और सुरक्षित व्यवहार के तरीके सिखाए। उन्होंने भारत को डिजिटल इंडिया ही नहीं, सेफ डिजिटल इंडिया बनाने पर जोर दिया और ऑनलाइन सुरक्षा के बेसिक एवं एडवांस नियमों के बारे में भी बताया। उन्होंने बच्चों को ऑनलाइन धोखाधड़ी, डेटा सुरक्षा, और साइबर बुलिंग के प्रति जागरूक किया। इस सेशन से विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के महत्व और इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया। विशेषज्ञों ने यह भी बताया कि सोशल मीडिया पर कैसे सावधानी बरती जा सकती है और निजी जानकारी की सुरक्षा कैसे की जा सकती है।
कार्यक्रम के पश्चात फाउंडेशन की ट्रस्टी ऋतु पटवारी ने बताया कि इस सेशन में सेफ डिजिटल इंडिया कैसे बने इसके बारे में विद्यार्थियों को शिक्षित किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को सिम क्लोनिंग के खतरों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हम विद्यालयों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ साथ- साथ विद्यार्थियों को मोटिवेशनल स्पीचेज, साइबर सिक्योरिटी सेशन्स , एंटरप्रेन्योरशिप सेशन्स और इसी तरह के तमाम टाक्स और वर्कशॉप्स के माध्यम से प्रेरित और जागरूक रखते हैं, जिससे वे जीवन में आने वाली किसी भी चुनौती का सामना आसानी से कर सकें और एक सफल नागरिक बन सकें। कार्यक्रम में अर्पित पाल, रुद्र गुप्ता, अनुराग बिल्जवान आरुष आदि कई विद्यार्थियों ने सवाल भी पूछे।
कार्यक्रम के पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य उमाकांत पंत ने कहा कि कोरोना महामारी के पश्चात विद्यार्थियों में मोबाइल उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ी है, इस सेशन से विद्यार्थियों को इंटरनेट के उपयोग में सावधानी बरतने की महत्वपूर्ण शिक्षा मिली, जो वर्तमान युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। छात्रों और शिक्षकों ने इस सत्र को अत्यंत उपयोगी और जानकारी पूर्ण बताया है।

अलग-अलग क्षेत्र से दो नशा तस्कर दबोचे, शराब बरामद

हरिद्वार/टीम एक्शन इंडिया
उत्तराखंड के मिशन नशा मुक्त अभियानके तहत लक्सर पुलिस ने कंकरखाता से सोपरी जाने वाली रोड़ से एक आरोपित को गिरफ्तार किया।
आरोपित का नाम सतपाल पुत्र जग्गे सिंह ग्राम सोपरी कोतवाली लक्सर जिला हरिद्वार बताया गया।
पुलिस ने आरोपित के पास से 10 लीटर कच्ची शराब बरामद की। अकोडा कला चौराहे से पुलिस ने 20 लीटर शराब पकड़ी और तस्करी में प्रयुक्त वाहन छोटा हाथी को जब्त कर लिया।

संक्षिप्त खबरें

एचडीएफसी बैंक और इंडियन डेंटल एसोसिएशन ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

देहरादून/टीम एक्शन इंडिया
भारत के अग्रणी निजी क्षेत्र के बैंक एचडीएफसी बैंक और इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आईडीए) ने नए स्नातक दंत चिकित्सकों को अपनी दंत चिकित्सा पद्धतियां स्थापित करने के लिए निर्बाध और परेशानी मुक्त फंडिंग की पेशकश करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इससे देश में मौखिक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। इस पहल के तहत दिए गए ऋण की गारंटी सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (सीजीटीएमएसई) द्वारा दी जाएगी, जो भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) मंत्रालय और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) की एक संयुक्त पहल है। समारोह में बोलते हुए, एचडीएफसी बैंक की जोनल प्रमुख और वरिष्ठ उपाध्यक्ष गायत्री राव कोर्डे ने कहा कि हम आईडीए और सीजीटीएमएसई के साथ हाथ मिलाकर खुश हैं, हमारा मानना है कि यह एक परिवर्तनकारी सहयोग हो सकता है। हमारे आकार के देश को अधिक दंत चिकित्सकों और मौखिक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे तक आसान पहुंच की आवश्यकता है। इस पहल के माध्यम से हम दंत चिकित्सकों, विशेष रूप से नए स्नातकों को ग्रामीण स्थानों सहित देश भर में क्लीनिक स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करके अंतर को पाटने में मदद कर रहे हैं।
विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति 10,000 आबादी पर दो दंत चिकित्सक हैं। यह साझेदारी एचडीएफसी बैंक के पूर्व जोनल प्रमुख स्वर्गीय नीलेश सामंत के दिमाग की उपज थी और उनके प्रयास तीनों संगठनों को एक आम मंच पर लाने में सहायक थे। इस विशिष्ट रूप से तैयार की गई पहल का उद्देश्य देश में मौखिक स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना और स्वास्थ्य देखभाल वित्त को बढ़ावा देना होगा। यह भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की राष्ट्रीय मौखिक स्वास्थ्य नीति के अनुरूप है। डॉ. अशोक ढोबले - सेक्रेटरी जनरल आईडीए ने कहा कि हमारे जैसे पेशे में जहां डेंटल क्लिनिक स्थापित करने के लिए उच्च प्रारंभिक पूंजी की आवश्यकता होती है, एचडीएफसी बैंक के साथ यह सहयोग युवा दंत चिकित्सकों को अपनी प्रैक्टिस शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करने में काफी मदद करेगा। हम इस पेशे को पूरे देश में बढ़ने और इसकी पहुंच का विस्तार करने में मदद करने के लिए एचडीएफसी बैंक और सीजीटीएमएसई के साथ सहयोग करके खुश हैं और इस तरह सभी के लिए इष्टतम मौखिक स्वास्थ्य के हमारे दृष्टिकोण में योगदान करते हैं। सीजीटीएमएसई के सीईओ और मुख्य अतिथि संदीप वर्मा ने कहा कि हमें एचडीएफसी बैंक और आईडीए के साथ जुड़कर और गारंटी तंत्र के साथ इस व्यवस्था को समर्थन देकर खुशी हो रही है। यह सहयोग उन दंत चिकित्सकों को भी वित्त पोषित करेगा जो क्रेडिट के क्षेत्र में नए हैं। हम प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर और डिजिटल चैनलों के उपयोग द्वारा पहल की मापनीयता को लेकर भी आश्वस्त हैं। इससे प्रक्रिया को निर्बाध रूप से पूरा करने में मदद मिलेगी और यह अधिक संख्या में दंत चिकित्सकों के लिए भी सुलभ हो जाएगी जिसके परिणामस्वरूप दंत चिकित्सा और संबद्ध क्षेत्रों में और अवसर पैदा होंगे।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी पद को अब राजपत्रित अधिकारी की प्रतिष्ठा प्रदान होगी

देहरादून/टीम एक्शन इंडिया
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी पद को अब राजपत्रित अधिकारी की प्रतिष्ठा प्रदान होगी। मुख्यमंत्री ने उत्तरांचल फेडरेशन ऑफ मिनिस्ट्रीयल सर्विसेज एसोसिएशन को दिया था आश्वासन। राज्य सरकार की ओर से आदेश जारी किए गए। राज्य सरकार ने मिनिस्टीरियल संवर्ग के "मुख्य प्रशासनिक अधिकारी" पद को राजपत्रित अधिकारी की प्रतिष्ठा प्रदान की है।गौरतलब है कि मिनिस्ट्रीयल संवर्ग लंबे समय से यह मांग कर रहा था, जिस पर मुख्यमंत्री ने मिनिस्ट्रीयल संघ को व्यवस्था में शीघ्र बदलाव किए जाने का आश्वासन दिया था। इसी क्रम में राज्य शासन की ओर से इस बाबत गजट नोटिफिकेशन जारी कर दिया गया है। राज्यपाल की स्वीकृति के उपरांत सचिव शैलेश बगोली की ओर से इस आशय के आदेश आज जारी किए गए हैं।उत्तरांचल फेडरेशन ऑफ मिनिस्टीरियल सर्विसेज एसोसिएशन की मांग के अनुसार राज्य सरकार ने मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नति हेतु पात्रता अवधि कुल 25 वर्ष के स्थान पर 22 वर्ष करने का गजट नोटिफिकेशन जारी कर दिया है।

भीमताल झील से मिला लापता रेंजर का शव, 15 दिन से थे गायब

हल्द्वानी/टीम एक्शन इंडिया
पिछले 15 दिनों से लापता वन क्षेत्राधिकारी हरीश पाण्डे का शव भीमताल से बुधवार को बरामद हुआ है। उनके लापता होने के बाद से ही पुलिस उन्हें तलाश रही थी। पुलिस उन्हें तलाशने के लिए पुलिस ने कई सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले थे। एक फुटेज में वह भीमताल की ओर जाते हुए दिखाई दिए थे, जिसके बाद उनकी भीमताल क्षेत्र में तलाश शुरू कर दी गई। उनका शव बरामद कर लिया गया।

Name Change

I Gaurav Chand S/o Janak Bahadur Chand R/o Chunabhatta, Banbasa Canal Range, Chandani, Champawat, Champawat, Uttarakhand - 262310, have changed my name to Aarush Rajwar

कांग्रेस नेता अपना नाम चमकाने की खातिर कर रहे पूर्व मुख्यमंत्री पर आधारहीन बयानबाजी :ठाकुर

टीम एक्शन इंडिया/हमीरपुर/विवेकानंद वशिष्ठ

हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद वर्तमान में भारत सरकार में मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर वर्तमान में क्या कर रहे हैं अब तक उन्होंने क्या कार्य किए हैं कितनी संसाधन निधि लोगों में बांटी है तमाम बातों की जानकारी के लिए कांग्रेस नेता आरटीआई का इस्तेमाल करके पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं यह बात जिला भाजपा सचिव विनोद ठाकुर ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में कही है उन्होंने कहा कि प्रदेश में उनकी सरकार है। केंद्रीय मंत्री क्या कर रहे भविष्य में क्या करेंगे कितनी सांसद निधि उन्होंने अब

तक बांटी है इसकी जानकारी लेने के लिए कांग्रेस के लोग आरटीआई का करें इस्तेमाल ना कि तथ्यहीन बयान बाजी कर छलिया केजरीवाल ना बने उनके मंत्री विधायक हैं उन्हीं के द्वारा प्रशासन और डीसी तक बिठाया गया है जानकारी लेने के लिए उन्हें किसी ने रोका नहीं है आरटीआई के माध्यम से दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा ना कि अनाप-शनाप बयानबाजी करने से होगा। जिला कांग्रेस के कुछ ऐसे नेता जिन्हें अभी राजनीति का अक्षर भी नहीं आता है वह पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल और केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के ऊपर अशोभनिय टिप्पणियां कर रहे हैं ऐसे कांग्रेस के नेता पहले अपना कद नाप ले उसके बाद कोई बात मीडिया के सामने रखें उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी की हालत आम आदमी पार्टी से भी बेहतर हो गई है क्योंकि झूठे बयान झुठी बातें आम आदमी पार्टी के नेता करने में अव्वल थे लेकिन अब यह झूठी बयानबाजी कांग्रेस नेता केजरीवाल से आगे निकल गए हैं विनोद ठाकुर ने हमीरपुर के कांग्रेसी नेताओ पर तंज कसते हुए कहा कि जब उन्हें राजनीति का ज्ञान नहीं था तब से पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल राजनीति कर रहे हैं झूठी आलोचना करने से पहले ऐसे नेता सच्चाई से रूबरू हो ले और रही कैबिनेट मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर पर उंगली उठाने की बात तो पहले वह अपना जमीनी स्तर राजनीति में जान ले उसके बाद कैबिनेट मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर पर उंगली उठाएं। केंद्र में रहकर अगर किसी ने हिमाचल प्रदेश के विकास को जमीन से आसमान तक पहुंचाया है तो वह सिर्फ अनुराग ठाकुर है उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री के ऊपर बयान बाजी करके कांग्रेस के लोग अपना नाम चमकाने की कोशिश करते हैं ताकि उन्हें सुर्खियां मिले लेकिन उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं जब यह लोग इस तरह का बयान शीर्ष नेताओं के ऊपर देते हैं तो वह खुद हंसी के पात्र बनते हैं वर्तमान में केंद्रीय मंत्री क्या कर रहे हैं और अब तक देश और प्रदेश के लिए उन्होंने क्या किया है इस बात की जानकारी हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को है।

पुलिस अधीक्षक ने नशे के खिलाफ शुरू किया हस्ताक्षर अभियान

क्रिकेट प्रतियोगिता

8 इस प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों के अलावा पड़ोसी राज्य की टीमें भी हिस्सा ले रही है

टीम एक्शन इंडिया/नाहन/एसपी जैरथ

पुलिस अधीक्षक सिरमौर रमन कुमार मीणा ने आज नाहन शहर के ऐतिहासिक चौगान मैदान मे हिमालयन स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित की जा रही महाराणा प्रताप क्रिकेट प्रतियोगिता के दौरान नशे के खिलाफ चलाए जा रहे हस्ताक्षर अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान खिलाडि ?ों को संबोधित करते हुए रमन कुमार मीणा ने आयोजिकों को बधाई दी और कहा कि नशे के खिलाफ संदेश देने के मकसद से आयोजित की गई यह प्रतियोगिता काफी महत्वपूर्ण है जिसके लिए उन्होंने आयोजकों को बधाई भी दी। उन्होंने युवा पीढ़ी से आह्वान किया कि खुद भी नशे से दूर रहे और समाज को भी नशे के बारे में जागरूक करें। गौर हो कि खेलेंगा युवा नशे से दूर रहेगा युवा थीम के साथ 08 दिसंबर को शुरू हुई यह प्रतियोगिता 13 दिसंबर तक चली इस प्रतियोगिता में प्रदेश के विभिन्न जिलों के अलावा पड़ोसी राज्य की टीमें भी हिस्सा ले रही है।इस दौरान क्लब के फ उंडर सदस्य सुरेंद्र हिंदुस्तानी, क्लब के अध्यक्ष भीम चौहान, महासचिव अजय नेगी, कोषाध्यक्ष करुणेंद्र सिंह ठाकुर, अनिल ठाकुर मौजूद रहे।

गलोड़ में मल्टी स्पेशियलिटी कैंप 17 को, विशेषज्ञ डॉक्टर करेंगे चैकअप

टीम एक्शन इंडिया/हमीरपुर/विवेकानंद वशिष्ठ

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग 17 दिसंबर को गलोड़ के हेल्थ वेलनेस सेंटर में बहु-विशेषज्ञ स्वास्थ्य मेले का आयोजन करने जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आरके अग्निहोत्री ने बताया कि इस शिविर में कई विशेषज्ञ डॉक्टर लोगों का चैकअप करेंगे। उन्होंने बताया कि इस शिविर में जनरल मेडिसिन, स्त्री रोग, चर्म रोग, सर्जरी, नेत्र रोग, हड्डी रोग, मनोरोग, नाक, कान और गला रोग के विशेषज्ञ डॉक्टर अपनी सेवाएं देंगे।

गोबर खरीद योजना के तहत खण्ड स्तर पर स्थापित होंगे क्लस्टर: कृषिमंत्री

प्रावधान

8 उन्होंने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा कई प्रावधान किए गए हैं।

टीम एक्शन इंडिया/शिमला/चमन शर्मा

कृषि मंत्री चन्द्र कुमार ने गत दिवस को कृषि और पशुपालन विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश के किसानों की आर्थिकी सुदृढ़ करना सरकार की प्राथमिकता है। सरकार द्वारा दूध खरीद मूल्य में 6 रुपये की वृद्धि सहित पशुपालकों व किसानों के

हित में अनेक ठोस निर्णय लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जनवरी, 2024 से गोबर खरीद योजना शुरू की जाएगी। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने हाल ही में इस योजना को आरम्भ करने की घोषणा की है। कृषि एवं पशुपालन विभाग इसे धरातल पर उतारने के लिए सभी तैयारियां कर रहा है। उन्होंने कहा कि योजना की सफलता के लिए पशुपालन और कृषि विभाग सामजस्य स्थापित करए कार्य करना सुनिश्चित करें। योजना का क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए पशुपालन विभाग और कृषि विभाग के दो नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। आरम्भिक चरण में योजना के अंतर्गत एक ब्लॉक में 250 किसानों को पंजीकृत किया जाएगा। छोटे, सीमांत और प्रगतिशील किसानों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से उनके कलस्टर बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि क्लस्टर में सम्मिलत किसानों को कृषि के साथ.साथ मुर्गी पालनए मौन पालन जैसे संबद्ध क्षेत्रों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इन किसानों को प्रदेश सरकार की अनुदान योजनाओं का लाभ भी दिया जाएगा। कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों से खरीदे गए गोबर का भण्डारण किया जाएगा और गोबर की आपूर्ति बागवानी, कृषि क्षेत्र और नर्सरी इत्यादि में सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा उत्पादित जैविक उत्पादों के विपणन के लिए बाजार उपलब्ध करवाया जाएगा और जैविक फसलों को आकर्षक दाम पर खरीदा जाएगा।

उन्होंने कहा कि किसानों को प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाओं और नीतियों से अवगत करवाने के लिए ई-पुस्तिका उपलब्ध करवाई जाएगी।शाहपुर से विधायक केवल सिंह पठानिया ने किसानों, बागवानों के हितों में लिए जा रहे निर्णयों के लिए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और कृषि मंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा कई प्रावधान किए गए हैं।

संक्षिप्त खबरें

मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने क्षेत्रवासियों से इस शिविर का लाभ उठाने की अपील की है।

टीम एक्शन इंडिया/चंबा/हामिद

विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया 14 दिसंबर को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला/रूंबनेट के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता करेंगे। विभागीय प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि विधानसभा अध्यक्ष 14 दिसंबर को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला/रूंबनेट के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता करने के पश्चात दोपहर बाद लूहनी से भराणा दा बासा संपर्क मार्ग का भूमि पूजन भी करेंगे।उन्होंने बताया कि विधानसभा अध्यक्ष के जारी प्रवास कार्यक्रम के अनुसार वे 15 दिसंबर को ककीरा में ककीरा-कटलू संपर्क मार्ग का शिलान्यास करने के साथ कुडेरा-ककीरा उठाऊ पेयजल योजना का लोकार्पण भी करेंगे। कुलदीप सिंह पठानिया 16 दिसंबर को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला खरगट के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता करेंगे और दोपहर बाद दुढाला से समलूना संपर्क मार्ग का भूमि पूजन करेंगे।उन्होंने बताया कि 17 दिसंबर को विधानसभा अध्यक्ष राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला गोला के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता करेंगे।उपायुक्त अपूर्व देवगन ने ईवीएम प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

जम्मू कश्मीर से 370 समाप्त करना ऐतिहासिक फैंसला: बलदेव सूद

टीम एक्शन इंडिया/जोगिंद्रनगर/संगराय

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त करने के केन्द्र सरकार के फैसले को वरकरार रखने का सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ का ऐतिहासिक फैसला है। स्वाभिमान पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष बलदेव राज सूद द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि राष्ट्रपति का अनुच्छेद-370(1)(डी) के तहत सांविधानिक आदेश 272 जिसमें जम्मू-कश्मीर में भारत का संविधान लागू करने का प्रावधान है को शीर्ष कोर्ट ने वैध माना है। इस फैसले से धारा 370 के अनुसार जम्मू-कश्मीर के अपने अलग संविधान की वैधता समाप्त हो गई तथा राष्ट्रपति के सांविधानिक आदेश 273 की वैधता सिद्ध हो गई। अतः यह फैसला देश की अखंडता को बनाए रखने में कारगर सिद्ध होगा। उन्होने कहा कि अस्थाई अनुच्छेद 370 के हटने से जम्मू.कश्मीर राज्य का भारत में एकीकरण पूर्ण हो गया है तथा अब जम्मू.कश्मीर के अलग संविधान का कोई महत्व नहीं रहा है। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक फैसले पर स्वाभिमान पार्टी सांविधानिक पीठ के पांच सदस्यीय न्यायधीशों के प्रति अभार व्यक्त करती है तथा भारत सरकार को हार्दिक वधाई देती है।

विकास खंड स्तर पर स्थापित किए जाएंगे स्वचालित मौसम केंद्र: डॉ. धीमान

टीम एक्शन इंडिया/चंबा/हामिद

मौसम आधारित फ सल बीमा योजना के अंतर्गत मौसम के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए विकास खंड स्तर पर स्वचालित मौसम मापक केंद्र और पंचायत स्तर पर स्वचालित वर्षा मापक यंत्र स्थापित किए जाएंगे। इन केन्द्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर किसानों को फ सल बीमा का क्लेम निर्धारित करने में सुविधा होगी। यह जानकारी देते हुए उप निदेशक कृषि डॉ कुलदीप धीमान ने बताया कि यह स्वचालित वर्षा मापक यंत्र और स्वचालित मौसम मापक केंद्र स्थापित करने के उचित स्थान चयनित किए जाएंगे जिसके लिए सभी विकास खंड के कृषि अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं।उन्होंने बताया कि सम्बंधित लोगों की सहमति से वर्षा या मौसम मापक यंत्र या तो पंचायत या किसी भी विभाग या स्कूल की जमीन में स्थापित किया जा सकता है। यदि स्कूल के अध्यापक स्कूल की जमीन में इन यंत्रों को लगाने की अनुमति देते हैं तो उस स्कूल के अध्यापक स्कूल में पढ? वाले बच्चों को भी समय समय पर इस यंत्र की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी दे पाएंगे। खंड स्तर पर मौसम मापक यंत्र लगाने के लिए 7-7 वर्ग मीटर भूमि और पंचायत स्तर पर वर्षा मापक यंत्र लगाने के लिए 6-5 वर्ग मीटर भूमि आवश्यकता होगी। यह यंत्र लगाने के बाद इस जमीन के चारों ओर बाड़ लगा दिया जाएगा ताकि जंगली जानवर या बेसहरा पशु इसमें कोई नुक्सान न करें।उन्होंने यह भी बताया कि मौसम मापक यंत्र या वर्षा मापक यंत्र लगाने के लिए कोई भी संस्था विकास खंड के कृषि अधिकारियों से संपर्क कर सकते है।

ईवीएम तथा वीवीपैट के माध्यम से मतदान की जानकारी होगी प्रदान

टीम एक्शन इंडिया/चंबा/हामिद

उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अपूर्व देवगन ने बुधवार को लोकसभा निर्वाचन-2024 के दृष्टिगत जनसाधारण में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और वोटर वैरिफ ायबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) की जानकारी एवं जागरूकता को लेकर उपायुक्त कार्यालय के परिसर से प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मीडिया कर्मियों से बातचीत करते हुए अपूर्व देवगन ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग तथा मुख्य निर्वाचन अधिकारी हिमाचल प्रदेश के दिशा-निदेर्शानुसार ये प्रचार वाहन जिला की पांचों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के सभी मतदान केंन्द्रो में मतदाताओं को इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) और वोटर वैरिफ ायबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वीवीपैट) की कार्य प्रणाली से संबंधित जागरूकता एवं जानकारी प्रदान करेगा। साथ में उन्होंने यह भी बताया कि जिला के पांचों विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों के तहत कुल 631 मतदान केंद्र हैं। इनमें विधानसभा क्षेत्र चंबा के तहत 122 मतदान केंद्र, डलहौजी विधानसभा क्षेत्र में 113 मतदान केंद्र, भटियात विधानसभा क्षेत्र में 121 मतदान केंद्र, चुराह विधानसभा क्षेत्र में 123 मतदान केंद्र और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र भरमौर के 152 मतदान केन्द्रों के तहत उपमंडल भरमौर में 113 तथा उपमंडल पांगी में 39 मतदान केंद्रों पर प्रशिक्षित इंजीनियर का दल ईवीएम तथा वीवी पैट की जागरूकता एवं जानकारी को लेकर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करेगा। अपूर्व देवगन ने आगे बताया कि इस दौरान ईवीएम प्रशिक्षक इंजीनियरों का दल प्रत्येक मतदान केंद्र पर निर्धारित कार्यक्रम के तहत पारदर्शी तरीके से ईवीएम तथा वीवीपैट के माध्यम से मतदान करने की संपूर्ण प्रक्रिया की जानकारी से जनसाधारण को अवगत करवाएगा। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी मतदाताओं से आग्रह किया है कि वे ईवीएम जागरूकता कार्यक्रम के तहत महत्वपूर्ण जानकारी अवश्य प्राप्त करें।

सरोच ब्राह्मण सभा का वार्षिक सम्मेलन आयोजित

टीम एक्शन इंडिया/ऊना/राजन पुरी

सरोच ब्राह्मण सभा का वार्षिक सम्मेलन व वार्षिक भंडारा बुधवार को जटोली में आयोजित हुई। बैठक में सरोच ब्राह्मण परिवारों के सदस्य पंजाब, हिमाचल दिल्ली व चंडीगढ़ से शामिल हजारों की संख्या में सरोच परिवार के सदस्यों ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। बैठक में पूर्व राजस्व मंत्री राजन शर्मा उपस्थित रहे। सभा के अध्यक्ष संदीप कुमार, महासचिव हंसराज सरोच व कोषाध्यक्ष विनोद सरोच ने सभा के वार्षिक रिपोर्ट की जानकारी दी। साथ ही सभा के अगामी कार्यक्रम पर चर्चा की गई। बैठक में सरोच परिवार की समस्याओं पर चर्चा हुई।

ईको क्लब के द्वारा द मैग्नेट पब्लिक स्कूल हमीरपुर में करवाया गया इंटर हाऊस प्रतियोगिताओं का आयोजन

आयोजन

8 द मैग्नेट पब्लिक स्कूल हमीरपुर में ईको क्लब के द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन इंटर हाऊस हुआ।

टीम एक्शन इंडिया/हमीरपुर/विवेकानंद वशिष्ठ

द मैग्नेट पब्लिक स्कूल हमीरपुर में ईको क्लब के द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन इंटर हाऊस हुआ। जिसमें स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम मानसी, द्वितीय आशिमा शर्मा, तृतीय पायल। पेंटिग प्रतियोगिता में प्रथम नेहा, अर्नव सिंह, द्वितीय महक, आदित्य, तृतीय अंशिका और विज्ञान प्रश्नोत्तरी में शिवालिक हाऊस के विजेता अक्षत, आस्था, प्रयागांशी, अम्बिका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अरावली हाऊस में अंशिका, पायल, संराश, श्रेया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके उपरान्त विद्यालय के प्रधानाचार्य अरूण कुमार चौहान ने सभी विजेता छात्रों को हार्दिक बधाई दी और उपहार के तौर पर सभी बच्चों को नगद राशि दो हजार दी और साथ ही में उनको भविष्य में और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

सिरमौर के गिरिपार में बूढ़ी दीवाली धूमधाम से मनाई

टीम एक्शन इंडिया/नाहन/एसपी जैरथ

देश भर में दीपावली का पर्व एक महीने पहले मनाया जा चुका है मगर सिरमौर जिला के गिरीपार इलाके में आज दीपावली का आगाज हुआ है। दरअसल इस इलाके में बूढ़ी दिवाली मनाई जाती है जो देश भर मनाई जाने वाली दीपावली के एक महीने बाद होती है। आज सुबह करीब 4 बजे मशाल यात्रा के साथ इलाके में बूढ़ी दीपावली का शुभ आरंभ हुआ। गिरिपार के कई इलाकों में यह पर्व दो से तीन दिनों तक मनाया जाता है।बूढ़ी दीवाली पर आज सुबह करीब 4 बजे सभी गांव में मशाल यात्रा निकाली गई जिसमें बड़ी संख्या

में लोगों ने हिस्सा लिया। गांव के मंदिर परिसरों से शुरू होने वाली यह मशाल यात्रा पूरे गांव की परिक्रमा कर वापिस मंदिर परिसर में लौटती है। खास बात यह है कि पुरुष वर्ग ही इस मशाल यात्रा का हिस्सा बनता है लोगों ने बताया कि क्षेत्र में खुशहाली की कामना के लिए और भूत प्रेत आदि भगाने के लिए गांव में यह मशाल यात्रा निकाली जाती है ताकि गांव पर कोई बुरा साया न पड़े।

क्षेत्र यह परंपरा सदियों से चली आ रही है।लोगों ने यह भी बताया कि बूढ़ी दीवाली के दौरान यहां पर विशेष रूप से पहाड़ी व्यंजन भी तैयार किए जाते हैं जिनका यहां के लोग अपने रिश्तेदारों के साथ मिलकर खाने का लुत्फ उठाते है।

राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सुंदरनगर में मनाया गया शताब्दी समारोह

टीम एक्शन इंडिया/मंडी/खेमचंद शास्त्री

मुख्य संसदीय सचिव आशीष बुटेल ने कहा की राजकीय संस्कृति महाविद्यालय सुंदरनगर हमारी संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सन 1923 में संस्कृत भाषा और संस्कृति को संजोने के लिए स्कूल के तौर पर शुरू हुआ इस महाविद्यालय का सफर अपने में बहुत उपलब्धियां समेटे हुए है। उन्होंने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को भी बचाना है और साथ में आधुनिक युग के साथ भी चलना है। यह महाविद्यालय दोनों काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में इस महाविद्यालय को और आगे

बढ़ाया जाएगा। इस महाविद्यालय की सभी जरूरतों को पूरा किया जाएगा। श्री बुटेल राजकीय संस्कृत महाविद्यालय सुंदरनगर के शताब्दी महोत्सव में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पूरे प्रदेश में 8 संस्कृत कॉलेज स्थापित है। इस तरह के संस्थानों को बचाना उन्हें संरक्षण देना हम सब का दायित्व है। हमारे युवा हमारी संस्कृति को भूले न इसके लिए जो भी किया जाए कम है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार शिक्षा को सुधारने के लिए पूरी तरह संबेधनशील है। उन्होंने बताया कि दूरदराज के इलाकों में शिक्षक की कमी होने के कारण बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो इसके लिए अगले वर्ष तक हर उच्च पाठशाला में आईसीटी लैब स्थापित कर दी जाएगी ताकि विडियो कान्फ्रैं सिग के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया जा सके। शिक्षा विभाग अगले एक वर्ष में 30 हजार शिक्षकों के पद भरने जा रहा है। पूर्व संसदीय सचिव सोहन लाल ठाकुर ने कहा की किसी भी संस्थान के लिए इतना लंबा सफ र तय करना गौरब की बात है। उन्होंने बताया कि उन्होंने पहली बार विधायक बनने पर अपनी विधायक निधि से पहली राशि इस कॉलेज के लिए जारी की थी।उन्होंने बताया कि पिछली सरकार में महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य की पदोन्नति नहीं हुई। जबकि वर्तमान सरकार ने एक वर्ष के भीतर ही महाविद्यालयों में इन पदों को पदोन्नति से भर दिया हैं। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ खुशवंत ने अतिथियों का स्वागत किया और महाविद्यालय के 100 वर्ष के इतिहास का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने महाविद्यालय की समस्याओं के बारे में मुख्य संसदीय सचिव को अवगत करवाया। महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा इस अवसर पर आकर्षक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उन्होंने गिद्दा, लुड्डी, किन्नौरी नृत्य प्रस्तुत कर खूब समा बांधा। सीपीएस ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए अपनी ऐच्छिक निधि से 21,000 रुपये स्वीकृत किए।

बसंतपुर वृद्धाश्रम के सभी कमरों में लगाए जायेंगे एसी-कम-ब्लोअर: लोकनिर्माण मंत्री

टीम एक्शन इंडिया/शिमला/चमन शर्मा

लोक निर्माण, युवा सेवाएं व खेल मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने आज तहसील सुन्नी के बसंतपुर स्थित वृद्धाश्रम का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।इस अवसर पर उन्होंने आवासीय वृद्धजनों को शॉल वितरित किए एवं प्रीति भोज के लिए राशन भी उपलब्ध करवाया।लोक निर्माण मंत्री ने संस्थान में वृद्धों को प्रदान की जा रही सुविधाओं का भी जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को यहां रहने वालों को बेहतरीन सुविधा उपलब्ध करने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि आश्रम में

आगामी सर्दी एवं गर्मी के मध्यनजर सभी कमरों के लिए एसी-कम-ब्लोअर का प्रबंध किया जाएगा ताकि ताकि वृद्धजनों के लिए वृद्धाश्रम में रहना और आरामदायक हो सके।उन्होंने कहा कि वृद्धाश्रम में सोलर गीजर का भी प्रबंध किया गया है जिसमे से एक पैनल की मरम्मत की जानी है उन्होंने उसकी मरम्मत के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार निराश्रितों को हर सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए कृतसंकल्प है जिसके लिए समय.समय पर उचित कदम उठाए जा रहे हैं।

इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष गोपाल शर्मा, अध्यक्ष नगर पंचायत सुन्नी प्रदीप शर्मा, तहसीलदार सुन्नी सुनील चौहान, खंड विकास अधिकारी स्पर्श शर्मा, तहसील कल्याण अधिकारी राकेश कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

संपादकीय

अब जम्मू कश्मीर में विकास का नया सूर्योदय

भारत की संप्रभुता और जम्मू कश्मीर प्रान्त के लिए 11 दिसंबर 2023 एक ऐतिहासिक दिन बनकर आया। इस दिन उच्चतम न्यायालय की पांच जजों की संविधान पीठ ने जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35 ए को हटाने के निर्णय को वैध ठहराते हुए कहा कि यह एक अस्थाई धारा थी जिसे आज नहीं तो कल हटना ही था। मुख्य न्यायाधीश वाई वी चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 370 एक अस्थायी व्यवस्था थी। अदालत ने कहा कि भारत का संविधान जम्मू कश्मीर के संविधान से ऊंचा है और अनुच्छेद- 370 को बेअसर करने से जम्मू कश्मीर को भारत के साथ जोड़ने की प्रक्रिया मजबूत हुई है। न्यायाधीश चंद्रचूड़ जी ने कहा कि धारा 370 को हटाना संवैधानिक रूप से वैध है और केंद्र सरकार का निर्णय बिल्कुल सही है। उच्चतम न्यायालय ने अपने निर्णय में कई महत्वपूर्ण व ऐतिहासक टिप्पणियां की हैं जिनमे कहा गया है कि विलय पत्र पर हस्ताक्षर होने के बाद जम्मू कश्मीर के पास संप्रभुता का कोई तत्व नहीं है। जम्मू कश्मीर के लिए कोई आंतरिक संप्रभुता नहीं है। राष्ट्रपति की शक्ति का प्रयोग राष्ट्रपति के शासन के उद्देश्य के साथ उचित संबंध होना चाहिए। न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि जब संविधान सभा भंग कर दी गई तो सभा की केवल अस्थायी शक्ति समाप्त हो गई और राष्ट्रपति के आदेश पर कोई प्रतिबंध नहीं रहा। राष्ट्रपति द्वारा सत्ता का उपयोग दुर्भावनापूर्ण नहीं था और राज्य के साथ किसी सहमति की आवश्यकता नहीं थी। राष्ट्रपति द्वारा सत्ता का निरंतर प्रयोग दशार्ता है कि एकीकरण की प्रक्रिया जारी थी और इस प्रकार से सीओ 273 अवैध है। जम्मू कश्मीर का संविधान क्रियाशील है और इसे निरर्थक घोषित कर दिया गया है। मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने कहा कि जम्मू कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल किया जायेगा और हम लद्दाख को अलग करने के फैसले को बरकरार रखते हैं। उच्चतम न्यायालय ने अंत में कहा कि हम चुनाव आयोग को निर्देश करते हैं कि पुनर्गठन अधिनियम और राज्य के दर्ज 14 की धारा के अंतर्गत 30 सितंबर 2024 तक चुनाव कराये जायें। न्यायालय ने एक यह व्यवस्था भी दी है कि राज्य में 1980 के बाद हुई सभी प्रकार की आतंकवादी /पलायन की घटनाओं की जांच के लिए एक कमेटी बनायी जाये जो एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात और कश्मीरी पंडितों के लिए न्याय प्राप्ति का मार्ग खोलती है। इस व्यवस्था के आने के बाद 1980 के बाद घाटी में कश्मीरी पंडितों के साथ जो वारदातें हुई हैं उनकी जांच अब की जा सकेगी । उच्चतम न्यायालय की इस बेंच की अध्यक्षता मुख्य न्यायाधीश वाई वी चंद्रचूड़ कर रहे थे तथा बेंच में जस्टिस संजय किशन कौल, जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस बी आर गवई और जस्टिस सूर्यकांत शामिल थे। जस्टिस कौल की ऐतिहासिक टिप्पणी - जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 पर अपने फैसले में जस्टिस संजय किशन कौल ने कश्मीरी पंडितों के पलायन का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्हाने 1980 से राज्य में हुए मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच के लिए एक सत्य और सुलह आयोग बनाने का सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि यह आयोग आपराधिक जांच आयोग की तरह काम नहीं करेगा। जस्टिस कौल का मानना है कि आतंक के चलते राज्य की महिलाओं, बच्चों और पुरुषों ने बहुत कुछ झेला है।इसे भुलाकर आगे बढ़ने के लिए जख्मों को ठीक करने की जरूरत है।

लिव इन रिलेशन: कानून बनने के बाद भी विरोध जारी

निर्मल रानी

> "लिव-इन रिलेशनशिप कानून के पक्षधर इसे मूलभूत मानवीय अधिकारों और लोगों के व्यक्तिगत जीवन के विषय के रूप में देखते हैं तो वहीँ दूसरी तरफ एक बड़ा वर्ग इस व्यवस्था को भारतीय सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विरुद्ध मानता हैं। यह वर्ग इसे गैर पारंपरिक,अनैतिक यहां तक कि अधार्मिक भी मानता है। जबकि अदालत अपने निर्णय में स्पष्ट कर चुकी है कि "लिव-इन रिलेशनशिप को पर्सनल ऑटोनॉमी यानी व्यक्तिगत स्वायत्ता के चश्मे से देखने की जरूरत है, ना कि सामाजिक नैतिकता की धारणाओं से। " फिर भी 1978 में कानूनी मंजूरी मिलने के बावजूद अर्थात 45 वर्षों बाद भी इस कानून के विरुद्ध अभी भी देश के किसी न किसी भाग से स्वर उठते ही रहते हैं। परन्तु लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले जोड़ों को अदालतें यही कहकर संरक्षण देती रही हैं कि ये विषय "संविधान के आर्टिकल 21 के तहत दिए राइट टू लाइफ" की श्रेणी में आता है"

लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात 'स्वैच्छिक सहवास' को हमारे देश में कानूनी मान्यता हासिल हो चुकी है। भारत में लिव-इन रिलेशनशिप को 1978 में कानूनी मंजूरी मिली थी। उस समय बद्री प्रसाद बनाम डायरेक्टर ऑफ कंसॉलिडेशन नामक एक मुकद्मे में सर्वोच्च न्यायलय ने पहली बार लिव-इन रिलेशनशिप को वैध ठहराया था। इसके बाद 2010 में महिलाओं की सुरक्षा पर चर्चा करते हुए लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात 'स्वैच्छिक सहवास' को कानूनी मान्यता दी गई थी। परन्तु कानूनी मान्यता मिलने के बावजूद लिव-इन रिलेशनशिप में बनने वाले शारीरिक रिश्ते अर्थात बिना शादी किए एक ही घर में एक साथ रहने पर सामाजिक दृष्टिकोण से बार-बार सवाल उठते रहे हैं। लिव-इन रिलेशनशिप कानून के पक्षधर इसे मूलभूत मानवीय अधिकारों और लोगों के व्यक्तिगत जीवन के विषय के रूप में देखते हैं तो वहीँ दूसरी तरफ एक बड़ा वर्ग इस व्यवस्था को भारतीय सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विरुद्ध मानता हैं। यह वर्ग इसे गैर पारंपरिक,अनैतिक यहां तक कि अधार्मिक भी मानता है। जबकि अदालत अपने निर्णय में स्पष्ट कर चुकी है कि "लिव-इन रिलेशनशिप को पर्सनल ऑटोनॉमी यानी व्यक्तिगत स्वायत्ता के चश्मे से देखने की जरूरत है, ना कि सामाजिक नैतिकता की धारणाओं से। " फिर भी 1978 में कानूनी मंजूरी मिलने के बावजूद अर्थात 45 वर्षों बाद भी इस कानून के विरुद्ध अभी भी देश के किसी न किसी भाग से स्वर उठते ही रहते हैं। परन्तु लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले जोड़ों को अदालतें यही कहकर संरक्षण देती रही हैं कि ये विषय "संविधान के आर्टिकल 21 के तहत दिए राइट टू लाइफ" की श्रेणी में आता है। सर्वोच्च न्यायालय तो यहाँ तक कह चुकी है कि "शादीशुदा होने के बावजूद लिव-इन रिलेशनशिप में रहना भी कोई गुनाह नहीं है। और इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि शादीशुदा व्यक्ति ने तलाक की कार्रवाई शुरू की है या नहीं।"
निश्चित रूप से अदालत का यह फैसला

उन मानवाधिकारों की तजुर्मानी करता है जिसके तहत किसी भी व्यस्क व्यक्ति को अपने जीवन व भविष्य के बारे में निर्णय लेने का अधिकार हासिल है। जाहिर है जब किसी व्यस्क को अपनी मर्जी का कपड़ा पहनने,खाने-पीने,अपने शैक्षिक विषय चुनने,अपना कैरियर चुनकर भविष्य निर्धारित करने जैसे सभी अधिकार हासिल हैं फिर उसे अपना जीवन साथी चुनने जैसा महत्वपूर्ण निर्णय लेने का भी हक होना चाहिये। क्योंकि यह निर्णय जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है। सर्वोच्च न्यायालय ने 2006 के ऐसे ही एक मामले में फैसला देते हुए कहा था कि, "वयस्क होने के बाद व्यक्ति किसी के साथ रहने या शादी करने के लिए आजाद है।" परन्तु इसी दौरान लिव-इन रिलेशनशिप में ही रहने वालों से सम्बंधित कई खबरें ऐसी भी आ चुकीं हैं जो घोर अपराधपूर्ण तथा रिश्तों में विश्वासघात या धोखा साबित हुईं। कहने को तो यह नकारात्मक स्थितियां उस वैवाहिक रिश्तों के बाद भी सामने आती हैं जिन्हें पारंपरिक विवाह या 'अरेंज मैरिज ' कहा जाता है। परन्तु यह भी सच है कि सामाजिक व धार्मिक परम्परानुसार होने वाली शादियों में आने वाले किसी भी उतार चढ़ाव के समय परिवार व समाज बच्चों के साथ खड़ा होता दिखाई देता है। किसी भी पारिवारिक संकट के समय बच्चों के परिजन उनके साथ होते हैं। परन्तु लिव इन रिलेशन शिप में ऐसा नहीं हो पाता। क्योंकि चूँकि लिव-इन रिलेशनशिप अर्थात 'स्वैच्छिक सहवास' को हमारे देश की परम्पराओं व मान्यताओं के अनुसार अनैतिक माना गया है इसलिये प्रायः लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के इच्छुक लड़के या लड़की दोनों ही के परिजन इस रिश्ते में रहने के लिये शुरू से ही राजी नहीं होते। और यदि राजी होते भी हैं तो बच्चों के दबाव में आकर ही अपने अभिभावकों को इस रिश्ते में रहने के लिये किसी तरह अनमने तरीके से राजी कर लेते हैं। जबकि अदालत 'प्री-मैरिटल सेक्स' और 'लिव-इन रिलेशनशिप' के संदर्भ अपने एक फैसले में यहां तक कह चुकी है कि -"इसमें कोई शक नहीं कि भारत के सामाजिक ढांचे में शादी अहम है, लेकिन कुछ लोग इससे इत्तेफाक नहीं रखते और प्री-मैरिटल सेक्स को सही मानते हैं। आपराधिक कानून का मकसद यह नहीं है कि लोगों को उनके अलोकप्रिय विचार व्यक्त करने पर सजा दें। "
लिव-इन-रिलेशनशिप के खिलाफ सबसे अधिक धार्मिक व सामाजिक संगठन तथा खाप पंचायतें मुखरित रही हैं। गत वर्ष चरखी दादरी में आयोजित फोगाट खाप की सर्वजातीय महापंचायत में हिंदू मैरिज एक्ट में बदलाव करने और लिव इन रिलेशनशिप पर रोक लगाने के लिए सर्वसम्मति से फैसला लिया गया था और सरकार से इन मामलों में संज्ञान लेने की मांग की गयी थी। साथ ही यह निर्णय भी लिया गया था कि खाप द्वारा सामाजिक ताना-बाना बनाए रखने व समाज में एकजुटता लाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।इस पंचायत में सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जन जागरूकता अभियान शुरू करने को लेकर भी कई अहम फैसले लिए गए थे । पंचायत में प्रतिनिधियों ने लिव इन रिलेशनशिप से सामाजिक ताना-बाना बचाने व लिव इन रिलेशनशिप जैसे मामलों पर प्रतिबंध लगवाने की मांग की गयी थी । इसी तरह पिछले दिनों एक बार फिर जींद जिले की 23 खाप पंचायतें जाट स्कूल में इकठ्ठा हुई। यहाँ इन 23 खापों की महापंचायत में भी यही निर्णय लिया गया कि लिव इन रिलेशनशिप पर बना कानून सही नहीं है। इसको लेकर खापें बहुत नाराज हैं। इन खापों ने लिव इन रिलेशनशिप कानून को संसद के शीतकालीन सत्र में रद्द करने की मांग भी की है।

अदालत ने जिसतरह सामान्य शादी शुदा जोड़ों को उनके कर्तव्यों व अधिकारों के मद्देनजर कानूनों के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया है ठीक उसी तरह लिव इन रिलेशन में रहने वाले जोड़ों को तथा उनके बच्चों के अधिकारों को भी अपनी विस्तृत व्यवस्था देकर संरक्षित किया है। किसी व्यस्क के मानवाधिकार व निजी जिंदगी के नाम पर मिले इस अदालती संरक्षण के बावजूद हमारा भारतीय पारम्परिक समाज चाहे वे खाप पंचायतें हों,साधू संत,धर्म गुरु या मौलवी -काजी किसी भी धर्म के परम्परावादी लोग लिव-इन-रिलेशनशिप की इस व्यवस्था को पचा नहीं पा रहे हैं। यही वजह है कि लिव इन रिलेशन व्यवस्था के पक्ष में अदालती कानून बनने के बाद भी इसका विरोध अभी भी जारी है।

कविता

टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों के बीच,
नन्हें-नन्हें पैरों के निशान,
तोतली बोली में झूमती हवाएं,
लहरा लहरा कर उड़ता दुपट्टा,
अनाज की बालियां,
खेतों की हरियाली,
कल केल कर बहता पानी,
पहली बरसात की
काली मिट्टी की सोंधी खुशबू,
गोधूलि की फैली संध्या,
बैलों का मुंडी हिला हिला कर चलना,
छोटी सकरी सड़क पर,
बकरी और गाय हांकने की आवाज,
दूर दिखाई देता,
घास फूस का मचान,
और उस पर बैठा प्रसन्न मंगलू,
सब कुछ धुंधला दिखता,
फ्लैशबैक की तरह मलीन,
घिसटता मिट्टता सहमता दिखाई देता,
कसैला धूंआ
गोधूलि की बेला को धूमिल करता,
निश्चल पानी कसैला हो उठा,
नन्हें पैर भयानक बन गए,
काली सौंधी मिट्टी पथरीली हो चली,
छोटी पगडंडी हाईवे में बदल गई

संजीव ठाकुर

मानवजाति के साथ एलियंस की लुकाछुपी कब बंद होगी

वीरेंद्र बहादुर सिंह

नवंबर महीने के तीसरे सप्ताह में मणिपुर के आकाश में यूएफओ (अन आईडेंटीफाइड फ्लाइंग ओब्जैक) यानी कि एक अज्ञात वस्तु उड़ती दिखाई दी तो भारी उहापोह मच गई थी। दहशत की वजह से इम्फाल एयरपोर्ट को कुछ देर के लिए बंद करना पड़ा। इतना ही नहीं, ताबड़तोड़ इस उड़ती उड़नतश्तरी के बारे में पता लगाने के लिए दो रफाल विमान रवाना किए गए। हाशीमीरा एयरफोर्स बेज से उड़े रफाल विमान के रडार सिस्टम इस तरह उड़ने वाले किसी अंजान पदार्थ को खोज नहीं पाए। फिर भी सुरक्षा की वजह से वायुसेना ने एयरडिफैंस रिस्पॉन्स सिस्टम को ऐक्टिव कर दिया।
जब भी यूएफओ (अज्ञात उड़ने वाली वस्तु) दिखाई देती है तो एलियंस के बारे में चर्चा एक फिर शुरू हो जाती है। पर पहली बार ऐसा हुआ था कि मैक्सिको की संसद में एलियंस के अवशेष प्रदर्शित किए गए थे। उड़न तश्तरी के विशेषज्ञ और जानेमाने पत्रकार जेम मौसन दावा करते हैं कि एक हजार साल पुरानी ममी किए गए अवशेष अन्य ग्रह के जीव यानी कि एलियंस के हैं और पेरू के एक गड्ढे से मिले हैं। इन मृतदेहों को नजदीक से देखने पर पता चलता है कि यह मानव अवशेष नहीं हैं। उदाहरण के रूप में मनुष्य के हर हाथ और पैरों में पांच-पांच अंगुलियां होती हैं। जबकि इस अवशेष में मात्र तीन अंगुलियां हैं। इन अंगुलियों का कद भी मनुष्य की अंगुलियों की अपेक्षा लगभग दोगुना है। उनकी पसलियों का ढांचा भी मनुष्य से अलग है।
एलियंस की हड्डियां भी मनुष्य की हड्डियों की अपेक्षा हल्की होती हैं, पर मजबूत होती हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि मैक्सिको के जिस इलाके में ये मृतदेह मिली है, उस इलाके में बड़े--बड़े भू-चित्र हैं। यह मामला ऐसा सवाल खड़ा करता है कि क्या एलियंस का इस इलाके से किसी तरह का संपर्क है।
अपने घर का दरवाजा खुला हो और कोई अतिथि घर में पधारे तो क्या हमें पता नहीं चलेगा? बल्गेरिया के वैज्ञानिकों ने परग्रहवासियों के पृथ्वी आगमन के बारे में की जाने वाली बातों पर इस तरह का सवाल खड़ा करते हैं। बल्गेरिया की एकेडमी आफ साइंस की स्पेस रिसर्च इंस्टीट्यूट के डिप्टी डायरेक्टर लेजेर फीलीपोव का कहना है कि 'एलियन अभी भी हमारे आसपास ही उपस्थित हैं और वे हमेशा हमारा निरीक्षण करते रहते हैं। फीलीपोव ने यह भी बताया है कि 'एलियन हमारे दुश्मन नहीं हैं। हकीकत में वे हमारी मदद करना चाहते हैं, पर ऊनसे संपर्क करने के लिए हम अभी उतना विकसित नहीं हुए हैं'।
क्या एलियंस के पृथ्वी पर आने का कोई सबूत है? कोई निश्चित साक्ष्य तो नहीं है, पर इटली में स्थित आल्पस पर्वत श्रंखला के नजदीक वाल्कमोनिक से मिले प्राचीन चित्र दस हजार साल पुराने माने जाते हैं। इतना ही नहीं, इस बफीर्ले इलाके में खोद कर बनाए गए दो लाख से अधिक रेखाचित्र सांकेतिक हैं। इसमें कूछ रेखाचित्र अंतरिक्ष यान और अंतरिक्ष वीरों के लगते हैं।

विचार

सुबह बनाम रात: अध्ययन का सबसे अच्छा समय कौन सा है?

विजय गर्ग

पढ़ाई हर विद्यार्थी के जीवन का अभिन्न अंग है। उनके चरित्र और वातावरण के आधार पर सर्वोत्तम अध्ययन आदतें स्थापित करने के लिए अभ्यास और धैर्य की आवश्यकता होती है। कुछ छात्रों के लिए, सुबह का समय पढ़ाई के लिए सबसे अच्छा होता है, जबकि अन्य के लिए रात के समय पढ़ाई करने से सबसे अच्छे परिणाम मिलते हैं। विज्ञान के अनुसार, पढ़ाई के लिए सबसे अच्छा समय सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे के बीच, शाम 4 बजे से रात 10 बजे तक है। यह वह समय है जब मानव मस्तिष्क अधिग्रहण मोड में है। विज्ञान भी बताता है कि पढ़ाई के लिए सबसे अप्रभावी समय सुबह 4 बजे से 7 बजे के बीच है। हालाँकि पढ़ाई के लिए कोई सही समय नहीं हो सकता है, आइए सुबह और रात दोनों समय पढ़ाई के लाभों का विश्लेषण करें। सुबह पढ़ाई के फायदे जो छात्र सुबह अधिक ऊर्जावान होते हैं वे यदि सुबह अध्ययन करते हैं तो वे अधिक उत्पादक हो सकते हैं। ज्यादातर लोगों का मानना ??है कि पढ़ाई के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा होता है क्योंकि दिमाग सबसे तेज होता है। यह सच है क्योंकि सुबह के समय उपलब्ध प्राकृतिक रोशनी आंखों के लिए अच्छी होती है और छात्रों को सतर्क रखने में मदद करती है। किसी नए सिद्धांत को सीखने या पिछले कक्षा सत्र के नोट्स की समीक्षा करने के लिए सुबह की पढ़ाई अविश्वसनीय रूप से सर्वोत्तम है। इस समय पढ़ाई करना भी अच्छा होता है क्योंकि इससे विद्यार्थी की नींद में बाधा नहीं आती है। रात की तुलना में सुबह की पढ़ाई के दौरान अध्ययन समूह बनाना भी आसान होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अध्ययन करने का एक उत्कृष्ट समय है क्योंकि यह छात्रों को याद करने की बेहतर क्षमता प्रदान करता है। रात में पढ़ाई करने के फायदे रात्रि अध्ययन एक शांत और अधिक शांतिपूर्ण वातावरण से जुड़ा हुआ है। रात में विकर्षण कम होते हैं क्योंकि परिवार के अधिकांश सदस्य सो रहे होते हैं और टीवी जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उपयोग में नहीं होते हैं। कम व्याकुलता रचनात्मकता और बेहतर एकाग्रता को बढ़ावा देती है। अध्ययन सत्र के बाद सोने से याददाश्त में भी सुधार हो सकता है और जानकारी को समेकित किया जा सकता है। ध्यान देंः आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आपका बच्चा रात में पढ़ाई के बावजूद लगभग 8 से 9 घंटे की नींद ले। आप पढ़ाई के लिए सबसे अच्छा समय कैसे निर्धारित करते हैं? अब जबकि हमने सुबह और रात दोनों समय पढ़ाई से जुड़े कई फायदे देखे हैंः सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह हैः आपके बच्चे के लिए पढ़ाई का कौन सा समय सबसे अच्छा है? जब प्रभावी अध्ययन की बात आती है तो अलग-अलग छात्रों के पास अलग-अलग समय होता है। इसलिए, आपको उस दिन का समय चुनना चाहिए जब आपका बच्चा पढ़ाई करता है; यह निम्नलिखित कारकों के आधार पर रात या दिन हो सकता है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आपका बच्चा सबसे अधिक सतर्क कब होता है? याद रखें कि अलग-अलग बच्चों की याददाश्त और सतर्कता अलग-अलग होती है, गुण जो अलग-अलग लोगों के लिए अन्य समय में बेहतर हो जाते हैं; उदाहरण के लिए, आपके बच्चे की दृश्य स्मृति सुबह में बहुत अच्छी हो सकती है लेकिन रात में उसकी आलोचनात्मक सोच क्षमता बेहतर हो सकती है। दूसरे, इस बात पर विचार करें कि आपके बच्चे के अध्ययन सत्र में टीवी, पारिवारिक बातचीत और रात के खाने के समय जैसे ध्यान भटकने की संभावना कम होती है, जो उनकी एकाग्रता को बाधित कर सकता है। ऐसे मामलों में, सूची विकर्षण के साथ एक समय चुनें। अंत में, ऐसे समय पर विचार करें जिसका पालन करना आसान हो क्योंकि निरंतरता से अध्ययन की दिनचर्या में सुधार होता है और अंततः बेहतर परिणाम मिलते हैं। सुबह की पढ़ाई के लिए अध्ययन युक्तियाँ। कृपया अपने बच्चे को उसके शरीर को हाइड्रेट करने के लिए जागने के बाद सबसे पहले पानी पीने के लिए प्रोत्साहित करें। बिस्तर से पढ़ाई करने से बचेंः बिस्तर से उठकर डेस्क से पढ़ाई करने से उनके दोबारा सोने की संभावना कम हो जाएगी। कृपया उन्हें सोने से बचने के लिए लिविंग रूम जैसे दूसरे कमरे से पढ़ाई करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक्शन इंडिया दैनिक

भगवान शंकर जी के ग्यारहवें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

आरएनआईः UTTHIN / 2009 / 31653

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक, राकेश भारद्वाज द्वारा मारुतिनंदन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, ए-15, बड़ा बाग, जीटी करनाल रोड इन्डस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली-33 से मुद्रित एवं 7/1 बल्लूपुर रोड, डॉ. टी पटनायक के सामने, कृष्णा नगर चौक के पास देहरादून, उत्तराखंड से प्रकाशित। एक्शन इंडिया में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किये गये विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र देहरादून ही होगा।

सम्पादकः रवि भारद्वाज (+919999889104)
actionindiaddn@gmail.com

वैधानिक सूचना

पाठकों को सलाह है कि एक्शन इंडिया, समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के आधार पर कोई निर्णय लेने से पहले विज्ञापन में प्रकाशित उक्त उत्पाद या सेवा के बारे में आवश्यक जांच-पड़ताल कर लें। समाचार पत्र प्रबंधक किसी भी विज्ञापन में गुणवत्ता, सेवा आदि के विवरण के बारे में विज्ञापनदाता द्वारा किए गए दावे या उल्लेख की पुष्टि या समर्थन नहीं करता है। अतः समाचार पत्र उक्त विज्ञापनों के बारे में किसी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होगा।

चिंतन

भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अहम रोल होगा

गोंदिया

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है कि मानवीय सुख सुविधाओं को प्राप्त करने में जहां एक और सुख सुविधाओं का अंबार होता है तो वहीं दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के नतीजो जैसा भयंकर तबाही का आलम भी होता है जो हम सदियों से देखते आ रहे हैं। परंतु मानव जाति है कि सिर्फ अपने वर्तमान सुख सुविधाओं में ही रमी रहती है, भविष्य में आने वाली हमारी पीढ़ियों के बारे में ध्यान नहीं देते हैं, अब समय आ गया है कि हमें अपनी इस सोच को रेखांकित करना होगा क्योंकि आज तकनीकी और प्रौद्योगिकी चार कदम आगे बढ़करआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की ओर दुनियां बढ़ गई है, जिसमें विकास की अपार संभावनाएं हैं तो तबाही की भी काफी संभावनाएं आ सकती है जो हमें वर्तमान डीपफेक के रूप में नजर आ रही है, इसके अलावा साइबर सिक्योरिटी, डाटा थेफ्ट और सबसे बड़ी बात यह है कि आतंकवादियों के हाथ में एआई टूल्स आ जाने से बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा जिसका विश्व के सभी देशों को मंथन करना जरूरी हो गया है। इसलिए ही एआई पर वैश्विक साझेदारी करना,तकनीक काआदान-प्रदान, विचार विमर्श करना जरूरी हो गया है, इसलिए ही 29 देशों का एआई पर वैश्विक साझेदारी शिखर सम्मेलन 12-14 दिसंबर 2023 को भारत में शुरू हो गया है, जिसका उद्घाटन माननीय पीएम ने 12 दिसंबर 2023 को किया जिसका उद्देश्य एआई के निरंतर विकसित हो रहे क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके क्योंकि एआई विकास और तबाही दोनों का टूल बन सकता है, इसलिए आज हम मीडिया व पीआईबी में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अहम रोल होगा।

रोबोटिक इंजीनियरिंग है उभरता करिअर विकल्प

विजय गर्ग

मैकेनिकल इंजीनियरिंग की उप- शाखा के रूप में रोबोटिक्स इंजीनियरिंग को शुरूआती पहचान मिली लेकिन अब इंजीनियरिंग की दुनिया में इस विधा का अलग मुकाम है। इसके जरिए स्वचालित मशीनों के विकास पर काम किया जाता है, जो इंसानों जैसी कार्यक्षमता के साथ उनके काम कर सके। ऐसी मशीनों के निर्माण का ध्येय जोखिमभरे कामों से इंसानों को बचाना है। नौकरी और मुनाफे के लिहाज से भी इस कोर्स की काफी अहमियत है। ऐसे में हम आपको बताएंगे कि आखिर इस कोर्स को करने के लिए आपके पास क्या योग्यता होनी चाहिए और आप इसमें कैसे करिअर बना सकते हैं। अगर आप इस क्षेत्र में करिअर बनाना चाहते हैं तो रोबोट के प्रकारों की जानकारी होनी चाहिए। औद्योगिक रोबोट, घरेलू उपयोग रोबोट, मेडिकल रोबोट, सेना रोबोट, मनोरंजन रोबोट, अंतरीक्ष रोबोट आदि रोबोट के प्रमुख प्रकार हैं। आप इनमें से कोई भी क्षेत्र चुन सकते हैं। रोबोटिक्स के क्षेत्र में अगर आप अपना करिअर बनाना चाहते हैं तो विज्ञान वर्ग से 12वीं करना होगा। इसके बाद आप मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, बीई या कंप्यूटर साइंस जैसे पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। वहीं, स्तानक की डिग्री पूरी करने के बाद आप परास्तानक डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। इस क्षेत्र में अच्छा करिअर बनाने के लिए आपको इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल और कंप्यूटर साइंस में जुड़ी अच्छी जानकारी होनी चाहिए। इस क्षेत्र से जुड़े कुछ शार्ट टर्म कोर्स जैसे आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, एडवांस रोबोटिक्स सिस्टम भी करके अपना करिअर बना सकते हैं।

नौकरी कहां मिलेगी

12वीं के बाद जैसे ही आप अपना ये कोर्स किसी अच्छे कालेज से पूरा करेंगे आपको इसरो, नासा, डीआरडीओ और हिंदुस्तान एरोनाटिक्स लिमिटेड सरीखे सरकारी संगठनों में काम करने के अलावा रोबोटिक्स क्षेत्र में निर्माण और शोध गतिविधियों में लगी निजी कंपनियों में भी नौकरी मिल सकती है। टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स, कृका रोबोटिक्स, हाई-टेक रोबोटिक सिस्टम्स लिमिटेड और पेरी लिमिटेड सहित देश में कई निजी रोबोटिक्स कंपनियां हैं, जो हर साल रोबोटिक्स पेशेवरों को नियुक्त करती हैं।

न्यूज फ्लैश

व्हीकल चोरी करने वाला एक आरोपी काबू

टीम एक्शन इंडिया/करनाल
एंटी व्हीकल थेफ्ट यूनिट की टीम द्वारा विश्वसनीय सूचना पर आरोपी प्रियांशु पाल पुत्र बड़ेलाल वासी ओल्ड एलआईजी मधुबन को बजीदा रोड से गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से उसकी निशानदेही पर एक मोटरसाइकिल व एक थ्रीव्हीलर बरामद किया गया। पुलिस जांच में पाया गया कि आरोपी प्रियांशु ने 18 नवंबर को शिकायतकर्ता पवन वासी हसनपुर का थ्रीव्हीलर पक्का पुल ऊंचा सामना से चोरी किया था और 20 नवंबर को पवन वासी मधुबन की मोटरसाइकिल बारात घर मधुबन से चोरी कर वारदात को अंजाम दिया था। इस संबंध में अज्ञात आरोपी के खिलाफ थाना मधुबन में दो मुकदमे दर्ज किए गए थे। पुलिस पूछताछ में पाया गया कि आरोपी ने जल्दी अमीर बनने के लिए चोरी की वारदातों को अंजाम दिया था। आरोपी को न्यायालय में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

एक किलो 844 ग्राम चरस और 7 ग्राम 14 मिलीग्राम स्मैक सहित आरोपी काबू

टीम एक्शन इंडिया/करनाल
नारकोटिक सेल की टीम द्वारा विश्वसनीय सूचना पर आरोपी हरजिंद्र सिंह पुत्र बलविंद्र सिंह वासी गुरुनानकपुरा करनाल को गुरुनानकपुरा से गिरफ्तार किया गया। आरोपी हरजिंद्र के कब्जे से 7 ग्राम 14 मिलीग्राम स्मैक व 1 किलो 844 ग्राम चरस बरामद की गई। इस संबंध में आरोपी हरजिंद्र के खिलाफ थाना रामनगर में एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस पूछताछ में पाया गया कि आरोपी नशा सेवन करने और बेचने का आदी है। आरोपी यह नशीला पदार्थ उत्तर प्रदेश के शामली जिला से लेकर आया था। आरोपी को आज न्यायालय में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। जिस व्यक्ति से आरोपी हरजिंद्र यह नशीला पदार्थ खरीदकर लाया था, उसकी भी गिरफ्तारी की जाएगी।

अवैध देशी पिस्तौल और एक जिंदा कारतूस सहित आरोपी गिरफ्तार

टीम एक्शन इंडिया/करनाल
सीआईए वन की टीम ने विश्वसनीय सूचना पर आरोपी सचिन उर्फ काकू पुत्र सुरेंद्र उर्फ बंजारा वासी कुटेल जिला करनाल को ऊंचा समाना रोड मधुबन से गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से 315 बोर का एक अवैध देशी पिस्तौल और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया। इस संबंध में आरोपी के खिलाफ थाना मधुबन में शस्त्र अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। मामले की आगामी तफ्तीश में पाया गया कि आरोपी सचिन यह असला शौकिया तौर पर उत्तर प्रदेश के मुरसलीन नाम के व्यक्ति से करीब चार महीने पहले आठ हजार रुपए में खरीदकर लाया था। आरोपी सचिन को आज न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

चोरी की वारदात को अंजाम देने वाला आरोपी गिरफ्तार

टीम एक्शन इंडिया/करनाल
थाना सिविल लाइन की टीम द्वारा विश्वसनीय सूचना पर आरोपी शामबहादुर उर्फ सोनू पुत्र दलबहादुर वासी पीडब्ल्यूडी कॉलोनी कुंजपुरा रोड करनाल को निर्मल कुटिया से गिरफ्तार किया गया। आरोपी के कब्जे से उसकी निशानदेही पर एक लैपटॉप बरामद किया गया। मामले की जांच में पाया गया कि आरोपी ने 10 दिसंबर को शिकायतकर्ता डॉक्टर प्रियंका का लैपटॉप और पर्स ट्रॉमा सेंटर से चोरी कर वारदात को अंजाम दिया था। इस संबंध में अज्ञात आरोपी के खिलाफ थाना सिविल लाइन में आईपीसी की धारा 457,380 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। आरोपी से पूछताछ में पाया गया कि आरोपी अत्यधिक नशा करने का आदी है, जिसने नशापूर्ति के लिए चोरी की वारदात को अंजाम दिया था। आरोपी के खिलाफ पहले भी करीब ग्यारह मुकदमे चोरी के तहत दर्ज हैं। आरोपी को आज न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

नगला फार्म और मुस्तफाबाद पहुंची विकसित भारत यात्रा

जन-जन की समस्या निवारण के लिए समर्पित है भाजपा सरकारः हरविंद्र, सेवा भाव से करें समस्या का समाधान अधिकारी

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। घरौंडा के विधायक हरविंद्र कल्याण ने कहा है कि अधिकारी सेवा भाव से कार्य करें। स्टॉल पर पहुंचे हर पात्र व्यक्ति की समस्या का समाधान करें ताकि उन्हें दफ्तरों के चक्कर न काटने पड़ें। भ्रष्टाचार व भाई भतीजावाद को खत्म करने के लिए अनेक योजनाओं को ऑनलाइन किया गया है। योजनाओं के क्रियान्वयन में कहीं थोड़ी बहुत कमी रह गई है तो उसे जल्द दूर किया जाएगा। विधायक कल्याण आज विकसित भारत संकल्प यात्रा के गांव नगला फार्म और मुस्तफाबाद पहुंचने पर कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। नगला फार्म में उनसे पहले अतिरिक्त उपायुक्त डॉ. वैशाली शर्मा ने विभिन्न स्टालों का निरीक्षण कर अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए। कार्यक्रम में पहुंचने पर सरपंच सुधीर कुमार व मुस्ताफाबाद में सरपंच प्रतिनिधि प्रवीण कुमार व ग्रामीणों ने विधायक का स्वागत किया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संदेश सुनाया गया। प्रदेश के विकास पर लघु फिल्म दिखाई गई। लोक संपर्क विभाग के कलाकारों ने विकास गीत प्रस्तुत किये। नगला फार्म में यशपाल ठाकुर और मुस्तफाबाद में विधायक ने भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की शपथ दिलाई। विधायक ने विभिन्नि विभागों स्टॉल्स का अवलोकन किया।

मुख्य अतिथि ने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री गरीबों का दर्द समझते हैं। सरकार ने सभी वर्गों के कल्याण के लिए योजनाएं लागू की है। प्रधानमंत्री दुनिया के ताकतवर नेताओं में से एक हैं पर उनका परिवार आज भी पहले की तरह सादगी भरा जीवन बिता रहा है यही स्थिति मुख्यमंत्री के परिवार की है। व्यवस्था परिवर्तन के कारण जहां नौकरियां मेरिट पर मिल रही है वहीं पात्र बुजुर्गों की पेंशन घर बैठे बन रही है। 19 लाख नये बी.पी.एल. कार्ड बनाए गए हैं। जब भाजपा सत्ता में आई तब 11 लाख बीपीएल कार्ड थे। अब ऑनलाईन 650 योजनाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

महापुरुषों के विचारों पर गंभीरता से अमल : हरविंद्र कल्याण ने कहा कि नरेंद्र मोदी और मनोहर लाल ने महापुरुषों के विचारों पर गंभीरता से अमल करते हुए गरीबों के लिए योजनाओं को पूर्ण रूप दिया है। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का यही सपना था। दीनबंधु छोटू राम ने कहा था कि तब तक किसान का शोषण जारी रहेगा, जब तक वह साहूकार के हाथों में फंसा है। राज्य सरकार ने किसानों की भलाई के लिए अनेक योजनाएं अमल में लाई हैं। इससे उन्हें शोषण से मुक्ति मिली है।

दयालु योजना- उन्होंने बताया कि यदि गरीब परिवार में मुखिया की मृत्यु हो जाती है तो परिवार को अधिक सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से दयालु योजना बनाई गई है, जिसमें एक से 5 लाख तक की सहायता का प्रावधान है।

मुफ्त शिक्षा - हरविंद्र कल्याण के अनुसार जिन परिवारों की सालाना आय 1.80 लाख तक है उनकी बेटियों के लिए सरकार ने मुफ्त शिक्षा का प्रावधान किया है जिनकी आय 1.80 से 3 लाख तक है उनकी आधी फीस सरकार वहन करेगी।

मुफ्त गैस कनेक्शन - नगला फार्म में उज्वला योजना के तहत नीलम, गीता व मिथिलेश को मुफ्त गैस कनेक्शन दिए गए। समाज कल्याण विभाग की ओर से दिव्यांग गुरनाम सिंह की पेंशन बनाई गई, 10 लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए।

लेखन व पेंटिंग की विजेता छात्र सम्मानित - मुख्य अतिथि ने पेंटिंग में पूजा, मानसी व वंशिका तथा लेखन प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाली संजना, गुरमीत व नेहा को सम्मानित किया।

योग निरोग रहने का सर्वश्रेष्ठ साधनः दिनेश गुलाटी

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। योग गुरु दिनेश गुलाटी स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक करने और उनमें योग के प्रति रुचि पैदा करने के लिए का कार्य पिछले 18 वर्षो से निरंतर कर रहे है। उनके द्वारा चलाए जा रहे मिशन के अंतर्गत उन्होंने अपने साथियों राजीव शर्मा एवम अनुज जैन के साथ तरावड़ी योग कक्षा में पहुंचकर योग साधकों को योग सत्र करवाया। सभी ने उत्साहपूर्वक योगिक क्रियाओं आसन और प्राणायाम का अभ्यास किया। इस कक्षा के शिक्षक मनोज कामरा ने भी साधकों को योगाभ्यास करवाया। दिनेश गुलाटी ने कहा कि समाज को योग के प्रति जागरूक करने की दिशा में उनके प्रयास हमेशा जारी रहेंगे। स्वस्थ और निरोग रहने के लिए जिंदगी में योग का बहुत महत्व है। योग स्वास्थ्य की कुंजी है और निरोग रहने का सर्वश्रेष्ठ साधन है। उन्होंने कहा कि प्राणायाम के द्वारा हम अपनी श्वासों का विस्तार कर सकते हैं, अपनी सांसो पर नियंत्रण कर सकते हैं और गहरी श्वास के साथ प्राणायाम करने से शरीर के सभी अंदरूनी अंग स्वस्थ होते हैं। शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है और शरीर ऊजार्वान बनता है।
कक्षा में योग साधकों ने सूर्य नमस्कार का विधिवत अभ्यास किया।

विभिन्न मामलों में उद्घोषित दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

टीम एक्शन इंडिया/करनाल
जिला पुलिस की टीम ने दो पीओ अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। दोनों को आज न्यायालय में पेश किया गया। जिला पुलिस के सभी थानों और पीओ स्टाफ की टीम द्वारा प्रतिदिन पीओ अथवा बेल जंपर अपराधियों को पकड़ा जा रहा है। आज जिला पुलिस की टीम द्वारा अदालत के आदेशों की उल्लंघना करने वाले दो पीओ आरोपी अमित पुत्र नफे सिंह वासी मंगलपुर और देवराज पुत्र जीतराम वासी टिकरी कैलाश करनाल को गिरफ्तार किया गया। दोनों आरोपियों को कोर्ट के आदेशों की उल्लंघना करने पर जेएमआईसी करनाल गुलशन वर्मा की अदालत द्वारा पीओ घोषित किया गया था।

किसी भी देश का भविष्य आने वाली पीढ़ी करती है तयः रेणु गुप्ता

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। रेलवे रोड स्थित एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, जो कि पहले केवल लडकों को शिक्षा प्रदान करता था। अब को-एजुकेशन बनने के पश्चात लड़कियां भी इस स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर सकेंगी।
इस विषय को लेकर आज एसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूल की प्रधानाचार्या रेणु गुप्ता ने जानकारी देते हुए कहा कि हर घर शिक्षा अभियान जिसका उद्देश्य प्राइमरी स्कूलों के ढांचे को मजबूत बनाना है, ताकि देश का हर बच्चा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सके और अपने जीवन का विकास कर सके। उन्होंने कहा कि किसी भी देश का भविष्य उस देश की आने वाली पीढ़ी के हाथ में होता है और वह पीढ़ी देश को क्या दिशा देगी, यह बात उसको मिलने वाली शिक्षा तय करती है। रेणु गुप्ता ने बताया कि हर घर शिक्षा अभियान के तहत विद्यालय द्वारा कक्षा पहली से पांचवी तक के छात्रों को फ्री दाखिला और फ्री यूनिफॉर्म दी जाएगी एवं अब इस विद्यालय में लडकों के साथ-साथ लड़कियां भी पढ सकेंगी। केवल 500 रुपये में अब हर अभिभावक अपने पहले से पांचवी तक के बच्चों को इस विद्यालय में पढ़ा सकते हैं। उन्होंने स्कूल की मैनजेमेंट विशेष रूप से स्कूल के प्रधान रविन्द्र सिंह भाटिया का धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि यह सब उनके सहयोग से ही सम्भव हो पाया है।

प्रवर्तन दल ने भवनों से उतारे एक दर्जन अनाधिकृत विज्ञापन बोर्डः अदिति

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। नगर निगम आयुक्त अभिषेक मीणा के आदेशानुसार शहर के भिन्न-भिन्न स्थानों व मार्गों पर अनाधिकृत रूप से लगाए गए विज्ञापन बोर्डों/होर्डिंग्स को उतारने का नगर निगम का अभियान जारी है। इसी कड़ी में बुधवार को शहर के मुगल कैनाल, कुंजपुरा रोड व आई.टी.आई. रोड पर विभिन्न शोरूम व भवनों पर लगे करीब एक दर्जन अवैध बोर्डों को उतारा गया। नगर निगम की संयुक्त आयुक्त अदिति ने बताया कि जिन भवनों से अवैध बोर्डों को उतारा गया है, सम्बंधित भवन मालिकों को दोबारा ऐसा न करने के लिए सख्त चेतावनी दी गई है। पुनः अवैध बोर्ड प्रदर्शित करने पर सम्बंधित व्यक्ति या फर्म पर विज्ञापन बायलॉज के अनुसार तीन गुणा जुमार्ना लगाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि शहर में किसी भी व्यक्ति, फर्म, कम्पनी या एजेंसी को अनाधिकृत रूप से निगम क्षेत्र में होर्डिंग, बैनर व फ्लैक्स लगाने की सख्त मनाही है और मनाही के बावजूद विज्ञापन प्रदर्शित करने वालों के खिलाफ प्रवर्तन दल, नगर निगम अधिनियम व विज्ञापन पॉलिसी के तहत जुमार्ना लगाने व एफ.आई.आर. करवाने की कार्रवाई करेगा। उन्होंने बताया कि अवैध रूप से लगाए गए विज्ञापन बोर्ड वाहन चालकों का ध्यान भटकाने के साथ-साथ शहर की सुंदरता को भी खराब करते हैं।

विज्ञापन के लिए 13 साईट अधिकृत- उन्होंने बताया कि विज्ञापन प्रदर्शित करने के लिए शहर में 13 साईट अधिकृत की गई हैं। अगर कोई व्यक्ति, फर्म या एजेंसी विज्ञापन लगाना चाहती है, तो वह इन्हीं 13 साईटों पर प्रदर्शित कर सकती है। इसके लिए नगर निगम द्वारा एक एजेंसी को टैण्डर अलॉट किया गया है। इसकी जानकारी के लिए नगर निगम की भवन शाखा से सम्पर्क कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अगर काई एजेंसी विज्ञापन प्रदर्शित करने के लिए साईट लेना चाहती है, तो वह ह्वद्यड्ड.श्चह्वशद्धद्दष्ह२४७.द्दश्0 पोर्टल पर ऑनलाईन आवेदन कर बोली में भाग ले सकती है।

संयुक्त आयुक्त ने शहर के व्यवसायीयों से अपील की है कि सार्वजनिक जगहों पर अनाधिकृत विज्ञापन बोर्ड ना लगाएं, ऐसा करना सरकारी नियमो का उल्लंघन है। इससे सार्वजनिक सम्पत्ति कुरूप होने के साथ-साथ शहर की सुंदरता भी खराब होती है।

सीजेएम ने किया उपमण्डल विधिक सेवा समिति इन्द्री का दौरा

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट और जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव सुश्री जसबीर कौर ने विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम-1987, नियमों और विनियमों के तहत निर्धारित प्रावधानों के अनुसार उप-उपमण्डल कानूनी सेवा समिति इंद्री की जाँच करने के लिए इन्द्री का दौरा किया। उन्होंने उपमण्डल विधिक सेवा समिति इन्द्री द्वारा चलाए जा रहे मध्यस्थता केंद्र और फ्रंट ऑफिस का निरीक्षण किया और उनको होने वाली लीगल लिटरेसी कैंप लगाते हुए किसी भी तरह की परेशानी के बारे में पूछा। वह कानूनी सेवा संस्थानों द्वारा प्रदान किए जा रहे कानूनी सेवा कार्यक्रम के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए उन्हें संवेदनशील बनाया। सुश्री जसबीर ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण का मिशन प्रगतिशील कानून के माध्यम से वादियों और पक्षों की सुरक्षा और सुरक्षा को मजबूत करना, जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाना और एक निष्पक्ष और कुशल शिकायत निवारण तंत्र तक पहुंच प्रदान करना है। यह वैकल्पिक विवाद निवारण तंत्रों में से एक है, यह एक ऐसा मंच है जहां अदालतों/आयोगों में लंबित विवादों/मामलों का सौहार्दपूर्ण ढंग से निपटारा/समझौता किया जाता है।

रिफाइनरी टाउनशिप रोड़ पर धड़ल्ले से काटी जा रही हैं अवैध कालोनियां

पानीपत/कमाल हुसैन
जिला प्रशासन की सख्ती के बावजूद भी आसपास के ग्रामीण एरिया में बड़ी मात्रा में अवैध कालोनीयों के कटने का धंधा फल- फूल रहा है। हालांकि प्रशासन कॉलोनी व कॉलोनाइजरों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने की बात अवश्य करता है लेकिन उसके बावजूद भी ग्रामीण इलाकों मे इस प्रकार से अवैध कालोनी काटे जाने का धंधा बदस्तूर जारी है।
नजदीकी गांव खोरा खेड़ी व ददलना के बीच टाउनशिप रोड पर कुछ कॉलोनाइजरों द्वारा धड़ड़ले से अवैध कालोनीयाँ काटी जा रही है। बताया जा रहा है कि जिला प्रशासन ने पिछले दिनों इसके आसपास कटने वाली कुछ कॉलोनीयों पर कार्रवाई अवश्य की थी लेकिन कुछ कॉलोनी को कार्रवाई किए बिना ही छोड़ दिया गया।

जसबीर कौर ने किया एमडीडी बाल भवन का दौरा

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। सीजेएम सुश्री जसबीर कौर ने बताया कि पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के निदेर्शानुसार एमडीडी बाल भवन फूसगढ़ रोड करनाल में रहने वाले बच्चों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं और आवास की देखभाल के लिए दौरा किया। संरक्षक और संस्थापक पीआर नाथ और सुश्री सुषमा नाथ एवं सुरेंद्र मान भी वहां मौजूद रहे।
उल्लेखनीय है कि समाज के निराश्रित बच्चे जिन्होंने अपने माता-पिता को खो दिया है या वे बच्चे जिनके माता-पिता उनका भरण पोषण करने में सक्षम नहीं हैं, एमडीडी ऑफ इंडिया चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूशन पूरी लगन के साथ उनकी देखभाल कर रहा है। एमडीडी चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूशन में वर्तमान में 87 लड़कियां रह रही हैं। सभी लड़कियां विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ रही हैं। एमडीडी चाइल्ड केयर संस्था की ओर से उन्हें सभी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं एमडीडी बाल भवन अनाथालय एक प्यारा शांतिपूर्ण घर से दूर घर है, जिसका एकमात्र उद्देश्य उन वंचित अनाथों के जीवन से प्यार करना और उनकी देखभाल करना है, जिनके पास दावा करने के लिए कुछ भी नहीं है और खुद से पूछने के लिए कोई नहीं है।
सीजेएम द्वारा बच्चों का व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से साक्षात्कार किया गया और उन्होंने बताया कि उन्हें दी जा रही सुविधाओं से वे पूरी तरह संतुष्ट हैं।

भारत विकसित राष्ट्र बनने के रास्ते पर अग्रसरः राणा

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का स्वप्न है विश्वभर में भारत की शान बढ़ाना। आज उनके नेतृत्व में भारत का नाम पूरी दुनिया में ऊंचा हो रहा है। पूरा विश्व उनके नेतृत्व में भारत के साथ चलने को आतुर है। ये शब्द भाजपा जिला अध्यक्ष योगेन्द्र राणा ने असंध विधानसभा क्षेत्र के गांव जबाला में विकसित भारत यात्रा में मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए कहे। उन्होंने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र केवल राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत पर चलकर ही संभव है। योगेन्द्र राणा ने यात्रा में शामिल जन समूह को प्रोसाहित करते हुए कहा कि भारत तभी विकसित देश बनेगा जब हम सब अपने कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी, निष्ठा लग्न तथा मेहनत पूरा करेंगे। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी की गारंटी है देश को 2047 तक विकसित देश बनाना। जब मोदी देश की अर्थ व्यवस्था को 11वीं अर्थव्यव्था से पांचवी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बना सकते है तो निसंदेह देश को विकसित राष्ट्र बना सकते हैं। ये प्रधानमंत्री की भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की गारंटी है। मोदी के नेतृत्व में देश विकसित देश बनने के रास्ते पर अग्रसर हो चुका है। योगेन्द्र राणा ने कहा कि एक ओर नरेंद्र मोदी भारत को विकसित देश बनाने में लगे हैं, वहीं अंतोदय के सिद्धांत का भी पालन कर रहे है। प्रधानमंत्री अन्न कल्याण योजना, जनधन योजना, इन्द्र धनुष टीकाकरण योजना, उज्जवला योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री बीमा योजना, कैंसर तथा हृदय का इलाज सस्ता करना तथा जन औषधि केंद्र खोलना, हर घर नल से जल, हर घर शौचालय, प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्जवला योजना, आयुष्मान योजना, नीम कोटिंग यूरिया, नेनो यूरिया, सॉयल हेल्थ कार्ड, मोटे अनाज को प्रोत्साहित करना, ये सब योजना अंतोदय की पुष्टि करती है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर पहुंचे पूर्व विधायक स. बख्शीश सिंह विर्क ने कहा कि मनोहर लाल सरकार ने ये फैसला किया है कि किसी भी बेटी को 20 किलोमीटर से अधिक दूरी पर कालेज में ना जाना पड़े, 20 किलोमीटर के दायरे में महिला कालेज खोलना, प्राइवेट कालेज में भी बेटियों की पढ़ाई फ्री करना, किसान को बागवानी, तिलहन तथा दलहन की खेती के लिया प्रोत्साहित करना, भवांतर योजना, सबसे अधिक फसलें एमएसपी पर खरीदना, खेतों के रास्ते पक्के करना, हर जिले में मेडिकल कालेज खोलने की योजना, चिरायु योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन देश में सबसे अधिक तीन हजार करना, राज्य को तरक्की के रास्ते पर बढ़ा रहे है।

विद्यार्थियों से राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का किया आह्वान

टीम एक्शन इंडिया/करनाल/राजकुमार शर्मा। भारतीय संसद पर हमले में शहीद हुए जवानों व नागरिकों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए आज नेशनल इंटीग्रेटेड फोरम ऑफ आर्टिस्ट्स एंड एक्टिविस्टस द्वारा आयोजित देश की बात कार्यक्रम में दो मिंट का मौन रखा गया व विद्यार्थियों को देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने व उन पर खरा उतरने का आवाहन किया गया। निसिंग स्थित ब्रह्मानंद पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने बच्चों से राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने व उनका निर्वहन करने के लिए प्रेरित किया।
उन्होंने कहा कि यह देश हमारा है और इस देश को हमारे बड़े बुजुर्गों ने कुर्बानियाँ देकर आजाद करवाया है। इसकी प्रगति में भी हम सब का योगदान है और इसकी एकता, अखंडता व आजादी को बचाये रखने के लिए भी हमारे ही परिवारों के बच्चे सरहदों पर कुर्बानियाँ दे रहे हैं। ऐसे में अगर किसी विषय को लेकर व्यवस्था से नाराजगी हो तो वो नाराजगी देश से नाराजगी में नहीं बदलनी चाहिए।

काम करते-करते थक जाती हैं आपकी कलाइयां

तो रोजाना करे ये 6 स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज

क्या आप भी दिनभर काम करने के बाद अपनी कलाइयों के दर्द से परेशान रहते हैं? तो आप भी अब इन तरीकों से अपने कलाइयों की एक्सरसाइज कर कलाइयों के दर्द से छुटकारा पा सकते हैं। अक्सर लोगों के साथ ऐसा कई बार होता है कि जब वह पूरा दिन कंप्यूटर और लैपटॉप पर काम करने के बाद शरीर में थकावट हो जाती है। इसके साथ ही लगातार काम करने से उनकी कलाइयों में दर्द महसूस होता है। जरूरी नहीं की काम की वजह से ही ऐसा हो कई बार ज्यादा बाइक चलाने से भी या फिर जिम करने से इस तरह का दर्द होने लगता है। इन सब चीजों से छुटकारा पाने के लिए आप रोजाना कलाइयों की एक्सरसाइज कर सकते हैं। यहां आपको कलाइयों के एक्सरसाइज के बारे में कुछ तरीके बताएंगे जो आपको आपकी कलाइयों के दर्द या फिर उसे आराम देने का काम करेगी।

कलाई को नीचे की ओर खींचें

आप अपने हाथ को अपने सामने लाकर सीधा करें और कलाई को नीचे की तरफ खींचें। आप अपने दूसरे हाथ से अपनी कलाई को नीचे की ओर खीचने की कोशिश करें। अपनी कलाई को करीब 20 से 30 सेकंड खींचे रखें। ऐसा ही अपने दूसरे हाथ की कलाई को करें। यह आपकी कलाई की नसों को खोलने का काम करेगी और साथ ही आपकी कलाई को आराम देगी।

मुट्ठी बनाएं और आराम से खोलें

कलाई को आराम देने के लिए आप एक मुट्ठी बनाएं जिसे आप करीब 4 से 5 सेकेंड के बाद खोलें और अपनी उंगलियों को खींचें। इस एक्सरसाइज से आपकी उंगलियों पर भी असर होगा। और साथ ही आपकी उंगलियां का दर्द कम होगा और काम करने के लिए तैयार हो जाएंगी। उनमें किसी तरह की कोई थकावट महसूस नहीं होगी।

टेनिस बॉल का करें प्रयोग

अगर आपको लग रहा है की आपकी कलाई से आपको काफी थकावट महसूस हो रही है तो आप टेनिस बॉल के साथ एक्सरसाइज कर सकते हैं। यह एक्सरसाइज आपको रोजाना करनी चाहिए खासकर उन लोगों को जिनका रोजाना का काम कंप्यूटर या फिर लैपटॉप का होता है।

कलाई को चारों और घूमाएं

आप अगर अपनी कलाई को जकड़ा हुआ या फिर दर्द महसूस कर रहे है तो आपको अपनी कलाई को चारों और घुमाकर एक्सरसाइज करनी होगी। आप पहले तो अपनी कलाई में मुट्ठी बना लें। इसके बाद आप अपने हाथ को अपने सामने लाएं और धीरे-धीरे इसे चारों और घुमाएं। इस एक्सरसाइज में आप पहले अपनी कलाई को घड़ी की तरह घुमाएं फिर उल्टा घुमाना शुरू करें। इससे आपकी कलाइ को धीरे-धीरे आराम मिलेगा। और जकड़न को खत्म करने में मदद मिलेगी। अगर जिम करते समय आपको महसूस हो रहा है कि कलाई में दर्द या फिर कमजोर हो रही है यानी उतनी मजबूत नहीं है जितनी होनी चाहिए। तो आप जिम में ही कलाई की एक्सरसाइज कर सकते है।

जिम में करें कलाई की एक्सरसाइज

यह एक्सरसाइज खासतौर पर कलाइयों को मजबूत बनाती है। इसे करने के लिए पहले बैठ जाएं और अपने हाथ को जांघ पर रखते हुए हथेलियों को नीचे की तरफ रखें। अब 8-10 किलो वजन वाले डम्बल को हाथ से पकड़े और कलाइयों पर जोर डालते हुए उसे थोड़ा सा उठाने की कोशिश करें। इसे करते समय अपनी कोहनी को न उठाएं सिर्फ कलाइयों और हथेली का प्रयोग करें। इसे कम से कम 20 बार दोहराएं।

डम्बल के साथ करें एक्सरसाइज

कलाइयों को मजबूत करने के लिए आप 4-5 किलो के डंबल को हथेली पर रखें और फिर उंगलियों को अंदर की तरफ मोड़कर उसे पकड़कर हथेली से कलाई तक रोल कराएं। फिर उंगलियों को वापस शुरुआती पोजीशन में ले जाएं। इसे कम से कम 10-15 बार करें। यह आपकी कलाई को और मजबूत करने में मदद करेगी।

क्या जीवन बीमा बीच जिंदगी के संकट दूर करने में सहायक हो सकता है?

जीवन काल के मध्य में हर व्यक्ति संकट की स्थिति से गुजरता है, जब उम्मीदों का वास्तविकता से सामना होता है। सामान्य तौर पर, युवावस्था में भावनात्मक एवं वित्तीय दृष्टि से व्यक्ति काफी संतुष्ट रहता है लेकिन 30 की उम्र शुरू होने के बाद से 45 और 55 की उम्र के बीच संतुष्टि का स्तर लगातार घटता जाता है। यही वो समय होता है, जब व्यक्ति भावनात्मक, सामाजिक और वित्तीय दृष्टि से अपने जीवन सफर के हासिल को लेकर मजबूती से सवाल करता है। और यदि इस तरह के विश्लेषण के बाद, उसके जीवन का हासिल उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होने पर, उसे मानसिक तनाव हो सकता है जानिए कैसे एक उपयुक्त जीवन बीमा समाधान उन्हें बेहतर प्रबंधन करने में मदद कर सकता है।

चिंता 1: क्या मैं अपने बच्चे केभविष्य की आर्थिक रूप से रक्षा कर सकूंगा?

हम जानते है कि एक कुलीन संस्थान में 2 साल का एमबीए कोर्स, जिसकी कीमत आज लगभग 6 लाख रुपए है, 20 साल बाद लगभग 40 लाख रुपए हो जाएगी। लेकिन अच्छी खबर यह है कि कई बीमा योजनाएं है जो आपके बच्चे की भविष्य की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए हैं। यह एक बच्चे की योजना, एक यूलिप या एक पारंपरिक मनी-बैक योजना हो, आप अपनी आवश्यकता के अनुकूल एक का चयन कर सकते है। यहां अनुशासित आवधिक भुगतानों के साथ आप बच्चे के भविष्य के लिए एक कोष जमा कर सकते है। यदि पॉलिसी की परिपक्वता से पहले आपके साथ कुछ होता है, तो लवित प्रीमियम यह सुनिश्चित करने से छूट जाते है कि पॉलिसी जारी है, और आपके बच्चे के सपने सुरक्षित हैं।

चिंता 2: बहुत अधिक और सेवानिवृत्ति केबारे में नहीं सोचना?

आपको सेवानिवृत्ति के बाद कितने पैसे की आवश्यकता होगी? यह निश्चित रूप से चिंता का कारण बन सकता है। जीवन बीमा का उपयोग सेवानिवृत्ति की योजना के लिए कई तरीकों से किया जा सकता है। आप ऐसे उत्पादों का चयन कर सकते है जो जीवन रक्षा की पेशकश करते हुए, सेवानिवृत्ति के बाद की जरूरतों को पूरा करने के लिए नियमित आय पैदा करने में मदद करेंगे। एक संपूर्ण जीवन बीमा बचत योजना या एक गारंटीकृत रिटर्न योजना, ऐसी नीतियां है जो न केवल असामयिक मृत्यु के मामले में सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि नियमित आय की पेशकश भी करेंगी या आय पोस्ट रिटायरमेंट में मदद करने के लिए एकमुश्त कॉर्पस बनाएंगी।

चिंता 3: चिकित्सा आपात स्थिति के लिए वित्त?

आप गंभीर बीमारी नीतियों या सवारों के लिए चुन सकते है जो कैंसर, दिल के दौरे या कई अंग विफलता जैसी बीमारियों के निदान पर पॉलिसीधारकों को नकद भुगतान की पेशकश करते है। ये योजनाएं आपको एकमुश्त भुगतान के साथ कम प्रीमियम पर उच्च कवर प्रदान करती है। वे न केवल आपके आय प्रतिस्थापन के रूप में कार्य करते हैं, बल्कि व्यय प्रबंधन करने में सहायता भी प्रदान करते है जैसे कि अस्पताल के दौरे, डॉक्टर के शुल्क, घर के किराए आदि पर खर्च किए गए पैसे।

चिंता 4: क्या होगा अगर मैं 40 के दशक में अपनी नौकरी खो दूं?

जीवन में कई घटनाएं हो सकती है, जिससे आय में कमी हो सकती है जैसे कि आर्थिक मंदी, स्वास्थ्य की समस्या, दुर्घटना के कारण आंशिक या स्थायी विकलांगता आदि के कारण जीवन बीमा पॉलिसियां है, जो आपकी आय को सुरक्षित करती है और मासिक भुगतान की गारंटी देती है। नौकरी छूटने के दौरान निर्दिष्ट अवधि। इसके अलावा, जीवन बीमा कवर के लिए गारंटीकृत बचत योजनाओं या व्यक्तिगत दुर्घटना और प्रीमियम की छूट जैसी सवारियां वित्तीय रूप से सहायता करने के लिए सुसज्जित होती है, जब कोई नौकरी छूट जाती है। देखें कि क्या आप इसे से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार है, और अपने मध्य जीवन की चिंता से मुक्त जश्न मनाने के लिए एक उपयुक्त जीवन बीमा समाधान के साथ अंतर के भरें।

परम राजा, चीफ डिस्ट्रिब्यूशन ऑफिसर, आदित्य बिड़ला सन लाइफ इंश्योरेंस

काबुली चने की चाट

सामग्री

- 200 ग्राम काबुली चने या छोले
- 50 ग्राम मटर के दाने
- 1 मध्यम आकार का प्याज
- 2 हरी मिर्च
- 2 चम्मच तेल
- 1 चुटकी सरसों
- 1 चुटकी उड़द की दाल
- मीठा नीम
- 1 चम्मच नींबू का रस
- स्वाद अनुसार नमक।

विधि

शाम की चाय के साथ चटपटी काबुली चना चाट बनाने के लिए सबसे पहले छोलों को 5 से 6 घंटे के लिए भिगोकर रख दें। इसके बाद अब छोलों में थोड़ा सा नमक और चुटकी भर सोडा डालकर उन्हें उबाल लें। अब मटर के दाने को गरम पानी में एक-दो बार उबालकर उसका पानी निथार लें। अब प्याज और हरी मिर्च बारीक काटकर एक कढ़ाई में तेल गरम करके उसमें उड़द की दाल, राई या सरसों में से एक चीज डालकर भून लें। अब इसमें मिर्च, मीठा नीम डालकर फ्राई करें लें। इसके बाद इसमें प्याज डालकर उसे नरम होने तक भूनने के बाद उसमें चने मिला दें। इस से थोड़ा नमक डालकर चनों को अच्छे से मिला लें। अब ऊपर से नींबू का रस धनिया काटकर बुरक दें। आपकी स्पाइसी काबुली चना चाट बनकर तैयार है। इसे शाम की चाय के सर्व करें।

सेब की चटनी

सामग्री

- हरे सेब- चार
- गुड़- एक बड़ा चम्मच (कतरा हुआ)
- जीरा- एक छोटा चम्मच
- सरसों- एक छोटा चम्मच
- मिर्च पाउडर- एक छोटा चम्मच
- गरम मसाला पाउडर- एक छोटा चम्मच
- आलिव/रिफाइंड ऑयल- एक बड़ा चम्मच
- काली मिर्च पाउडर- आधा छोटा चम्मच

विधि

सबसे पहले सेब का छिलका उतारकर उसे कद्दूकस कर लें। फिर एक पैन में ऑलिव ऑयल डालकर उसे गर्म करें। तेल गर्म होने पर उसमें सरसों डालकर भूनें। इसके बाद मिर्च, जीरा, गरम मसाला, काली मिर्च पाउडर डालें और उसे हल्का सा भूनें। मसाले भुनने के बाद सेब, नमक और गुड़ पैन में डालें और मध्यम आंच पर लगभग पन्द्रह मिनट तक पकाएं। जब चटनी थोड़ी गाढ़ी हो जाए, तो समझ जाएं कि वह तैयार हो गयी है। अब गैस को बंद कर दें। लीजिए, सेब की चटनी तैयार हुई। ठंडा होने पर इसे स्नैक्स अथवा भोजन के साथ परोसें। चाहें तो सेब की चटनी फ्रिज में रख कर 7-8 दिनों तक इस्तेमाल कर सकते है। बच्चों को यह चटनी बेहद पसंद आएगी।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)
रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। शुभांक-3-8-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)
कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। शुभांक-4-6-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा)
जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। दिन के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। परिजनों के सहयोग से काम बनाना आसान रहेगा। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। थोड़े प्रयास से कार्य सिद्ध होंगे। शुभ कार्य सम्पन्न होने से वातावरण आनन्द देने वाला बना रहेगा। शुभांक-3-6-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)
परिवारजन का सहयोग व समन्वय से काम बनाना आसान करेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा। बौद्धिक उलझनें बनी रहेंगी। लाभमार्ग प्रशस्त होगा। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होंगी। शुभांक-5-7-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)
मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। चिन्तनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। शुभांक-2-6-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-2-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)
कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह बना रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्यवसायक स्थितियां पैदा होंगी। प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-3-6-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)
स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-5-7-9

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)
महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-3-5-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी)
धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। शुभांक-3-4-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)
शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम भी होगा। व्यावसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। नैतिक दायरे में रहें। शुभांक-4-7-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)
धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। शुभांक-3-5-7

काकुरो पहेली - 2676

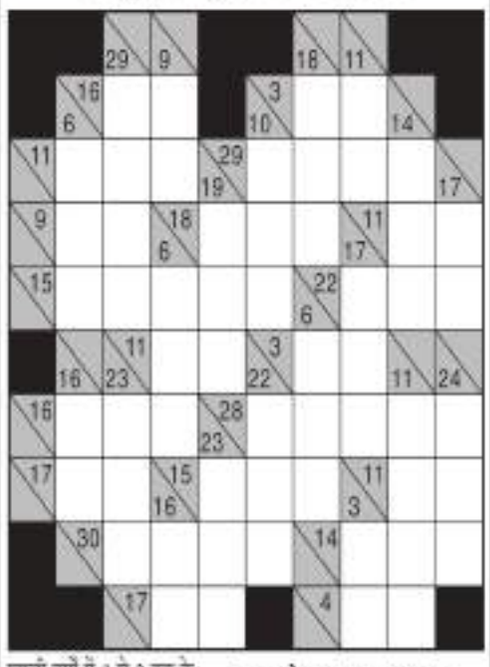

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं का जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

काकुरो - 2675 का हल

हंसी के फूव्वारें

तीन गप्पी ट्रेन में यात्रा करते हुए गप्पें हांक रहे थे. एक बोला- मैं आजमगढ़ का लखपति हूं, दूसरा बोला- मैं शामगढ़ का करोड़पति हूं, तीसरा बोला- भईया मैं तो सिर्फ अपनी पत्नी का पति हूं.

□ □ □

मालिक: (नौकर से) तुमने पत्र-पेटिका में पत्र डाल दिया ?
नौकर: नहीं हुजूर.
मालिक: क्यों नहीं डाला ?
नौकर: कैसे डालता ? हर पत्र-पेटिका पर ताला लगा था.

□ □ □

एक रोज बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा, जिन लोगों के नाम के साथ वान हो होता है वो आमतौर पर अच्छे आदमी नहीं होते, मसलन पीलवान, दरबान, वगैरह वगैरह.

बीरबल ने फौरन जवाब दिया जी हां मेहरवान.

□ □ □

प्राध्यापक: कला से किसे-किसे प्यार है खड़े हो जायें. सारे के सारे विद्यार्थी खड़े हो गये. सिर्फ एक विद्यार्थी बैठा रहा.

प्राध्यापक बोले: तुम्हें कला से प्यार नहीं. विद्यार्थी ने उत्तर दिया, कला मेरी बहन का नाम है. मुझे तो सिर्फ कमला से प्यार है.

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 2676

बायें से दायें:-

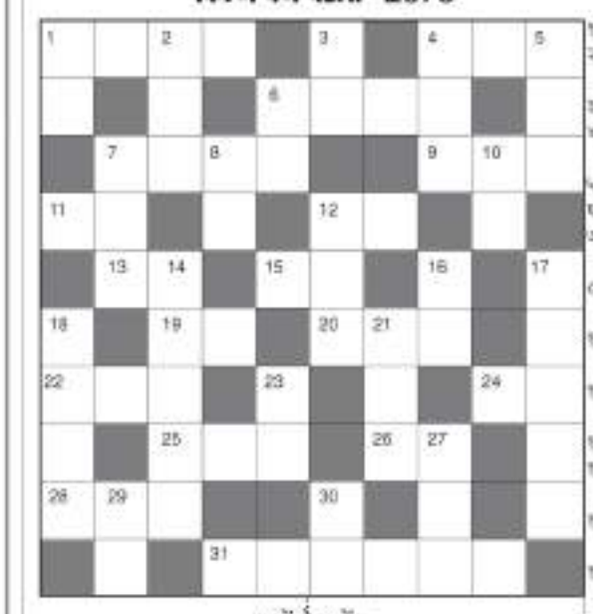

१. अमिताभ, सलमान, हेमा, महिमा की फिल्म-४
४. बी.आर. चोपड़ा की फिल्म 'निकाह' की नायिका कौन थी-३
६. अशोककुमार, संजीवकुमार, सुमिता सान्याल की फिल्म-४
७. फिल्म 'चाँद का टुकड़ा' में श्रीदेवी के साथ नायक कौन था-४
९. अतुल खान, आयशा जुल्का की 'ओ साकि रे ओ' गीत वाली फिल्म-३
११. 'आंख लड़ती है तो लड़ने दे' गीत वाली संजयदत्त, मनीषा स्नेहा की फिल्म-२
१२. अर्जुन रामपाल, जायेदखान, अमीषा की 'मैं इश्क उसका' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'बड़े नाज़ुक दौर से' गीत वाली अभिषेक, भूमिका चावला की फिल्म-२
१५. जॉन अब्राहम, उदिता गोस्वामी की 'अपनी बाहों में' गीत वाली फिल्म-२
१९. 'एसी ने एसी क्या है पहेली' गीत वाली ऋतिक, जैकी, करीना की फिल्म-२
२०. अक्षय, सुनील शेट्टी, करिश्मा, सोनाली की 'तेरा ये देख के' गीत वाली फिल्म-३
२२. फिल्म 'पूरब और पश्चिम' का निर्माता निर्देशक, नायक कौन था-३
२४. सुनीलदत्त, वहीदा, आशा पारेख की 'इतना ना मुझसे तू प्यार बढ़ा' गीत वाली फिल्म-२
२५. 'चप्पा चप्पा चरखा' गीत वाली चंद्रचूड़सिंह, अजय वाकी, रवि गोसाई, तब्बू की फिल्म-३
२६. 'मिलती है ज़िंदगी में' गीत वाली फिल्म 'आँखें' में धर्मेन्द्र के साथ नायिका कौन थी-२
२८. फिल्म 'राजाजी' में गोविंदा के साथ नायिका कौन थी-३
३१. अमिताभ, शशि, स्मिता की 'आज रपट जायें तो' गीत वाली फिल्म-३,३

ऊपर से नीचे:-

१. संजयदत्त, इंद्रकुमार, मनीषा की फिल्म-२
२. बॉबी देओल, रानी की 'मिलने से डरता है दिल' गीत वाली फिल्म-३
३. 'गुड मॉर्निंग इंडिया' गीत वाली फिल्म-२
४. कमल हासन, श्रीदेवी की 'ऐ ज़िंदगी गले लगा ले' गीत वाली फिल्म-३
५. राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर की फिल्म-३
६. 'दिल में तुझ के प्यार का' गीतवाली फिल्म-२
७. 'जो तुमको हो पसंद' गीत वाली राजेश खन्ना, शर्मिला टैगोर की फिल्म-३
८. देव आनंद, माला सिन्हा की 'जारे जारे उड़ जारे पंछी' गीत वाली फिल्म-२
१०. 'भैया मेरे राखी को' गीत वाली मनोज बाजपेयी, रवीना टंडन की फिल्म-२
१२. अजय, मास्टर मनजीत, आलका की 'एक तेरा साथ हमको' गीत वाली फिल्म-३
१४. 'चोरी चोरी नज़र' गीत वाली फिल्म-२,३
१६. नाना, अजय, फरदीन, ऐशा, उर्मिला की 'ये मर्द आहें मेरी' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'आज उनसे पहली मुलाकात होगी' गीत वाली राकेश रोशन, हेमा की फिल्म-३,२
१८. राकेश रोशन, जयाप्रदा की 'तुम संग प्रीत लगाई सजना' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'तुम्हें ज़िंदगी के उजाले मुबारक' गीत वाली धर्मेन्द्र, मीना कुमारी की फिल्म-३
२३. प्रशांत, ऐश्वर्या राय की फिल्म-२
२५. 'मैं तेरा दीवाना' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'शोले' में धर्मेन्द्र के किरदार का नाम ?-२
३०. अमिताभ वाली संजय लीला की फिल्म जिसमें रानी मुखर्जी मूक-बधिर बनी है-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2675

सूडोकु -2676

					1	4		
						5	8	
			7	2				
			2				6	7
4								3
5	8				9			
				8	5			
	7	6						
		9	3					

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2675 का हल

7	8	9	2	3	1	6	5	4
3	2	4	6	5	9	7	8	1
6	5	1	8	4	7	2	9	3
5	1	7	3	9	8	4	6	2
4	6	8	5	1	2	9	3	7
9	3	2	4	7	6	8	1	5
1	4	6	9	2	3	5	7	8
2	9	3	7	8	5	1	4	6
8	7	5	1	6	4	3	2	9

शब्द पहेली - 2676

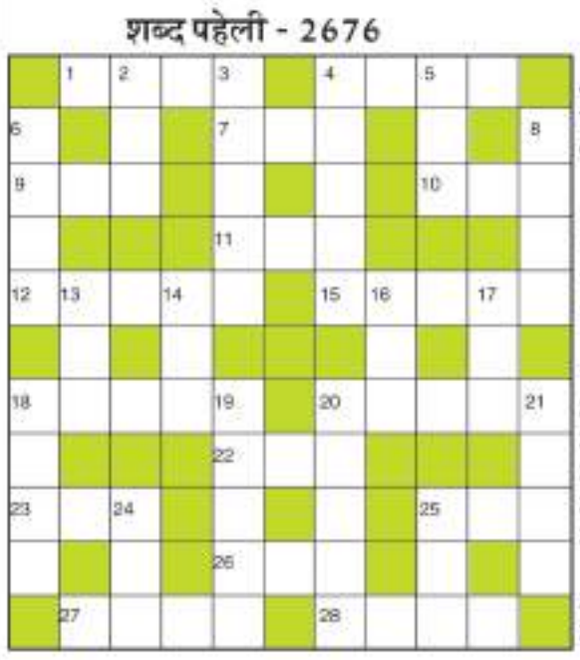

बाएँ से दाएँ

1. बेजोड़-4
4. परिचय, निशान-4
7. कला-3
9. सज्जनता, चरित्र, आदर्श-3
10. प्रथा, रिवाज-3
11. उपस्थिति-3
12. सेन्धमार-5
15. शयनागार, बेडरूम, आरामगाह-3,2
18. तड़के, सुबह सवेरे-5
20. चुगली करना-2,3
22. मैला, गंदा-3
23. रसद, आहार पदार्थ-3
25. प्रणाम, नमस्कार-3
26. तौलने का यंत्र, तकड़ी-3
27. स्थायी, प्राचीन-4
28. हुकूमत, राजगद्दी-4

ऊपर से नीचे

2. मुलाकात, मिलाप-3
3. खून से लथपथ-5
4. लालन-पालन-5
5. सेवक, नौकर, दास-3
6. धोखेबाज-4
8. समान, एक जैसा-4
13. पंकज, जलज-3
14. आघात, चोट-3
16. भरोसा, विश्वास-3
17. कुली, पालकी वाहक-3
18. जुर्म, गुनाह-4
19. स्वदेश वासी-5
20. शतपदी, कनखजूरा-5
21. अहमक, मूर्ख-4
24. स्नान करना-3
25. सम्मान, पगड़ी-3

शब्द पहेली -2675 का हल

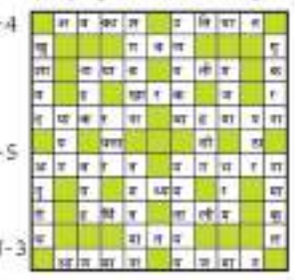

ऑस्ट्रेलिया की प्लेइंग 11 घोषित, इन खिलाड़ियों को मिला मौका

पर्थ । ऑस्ट्रेलिया ने यहां आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप सीरीज के शुरुआती मैच में पाकिस्तान के खिलाफ टीम की घोषणा कर दी है। जैसा कि अपेक्षित था, पैट कमिंस ने चोटों के पहले अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी की। बड़ी खबर ऑस्ट्रेलिया टीम के उप-कप्तान के रूप में ट्रैविस हेड की नियुक्ति है। वह मौजूदा स्टीव स्मिथ के साथ टीम के सह उप-कप्तान होंगे। हेड का प्रोमोशन उनकी क्षमताओं में विश्वास को दर्शाती है जिसने उन्हें हाल ही में आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप के सेमीफाइनल और फाइनल में बैक-टू-बैक मैच विजेता प्रदर्शन करते देखा है। इन दोनों खेलों में अपनी वापसी के लिए उन्होंने प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता और ऑस्ट्रेलिया ने रिकॉर्ड छठी बार ट्रॉफी जीती। इसके अलावा स्पिनर नाथन लायन साथी ट्वीकर टॉड मर्फी की जगह प्लेइंग इलेवन में वापस आए हैं, जो ऑस्ट्रेलिया इलेवन में एकमात्र बदलाव है। ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख स्पिनर जून में लॉर्ड्स में इंग्लैंड के खिलाफ पिंडली में चोट लगने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से चूक गए थे। हालांकि उन्होंने हाल के महीनों में घरेलू क्रिकेट में वापसी की है और न्यू साउथ वेल्स के लिए शार्ट कप और शेफ़ील्ड शील्ड में भाग लिया है। उम्मीद के मुताबिक डेविड वार्नर और उस्मान ख्वाजा पारी की शुरुआत करेंगे। एक मजबूत मध्यक्रम में मार्नस लाबुशेन, स्मिथ और हेड शामिल होंगे। मिशेल मार्श ऑलराउंडर की भूमिका निभाएंगे जिन्हें कैमरून ग्रीन पर तरजीह दी गई है।

श्रीसंत के साथ विवाद के सवाल से बचते नजर आए गंभीर, लीजेंड्स लीग 2023 में कहा था 'फिक्सर'

दुबई । लीजेंड्स लीग क्रिकेट के हाल ही में समाप्त हुए संस्करण में इंडिया कैपिटल्स और गुजरात जायंट्स के बीच एलिमिनेटर मुकाबले के दौरान मैदान पर पूर्व भारतीय टीम के खिलाड़ियों गौतम गंभीर और एस श्रीसंत के बीच तीखी बहस हो गई थी। विवाद के तुरंत बाद श्रीसंत ने एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें उन्होंने आरोप लगाया गया कि गंभीर ने उन्हें 'फिक्सर' कहा था। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में स्पॉट फिक्सिंग में कथित संलिप्तता को लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की अनुशासनात्मक समिति ने श्रीसंत पर प्रतिबंध लगा दिया था। केरल के तेज गेंदबाज का सात साल का प्रतिबंध सितंबर 2020 में समाप्त हो गया। कोलकाता नाइट राइडर्स के पूर्व कप्तान से हाल ही में एक रिपोर्टर ने इस घटना पर टिप्पणी करने के लिए कहा था। हालांकि, गंभीर इस मामले पर बोलने से बचते रहे। रिपोर्टर के सवाल पर गंभीर ने जवाब देते हुए कहा, 'देखिए पहली बात तो मेरे पास इस चीज़ में बोलने के लिए ऐसा कुछ नहीं है। 42 वर्षीय ने कहा कि वह युवा क्रिकेटरों को देखने के लिए एक महान कार्यक्रम में उपस्थित थे जो ईमानदारी के साथ अपने राज्य या राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। गंभीर ने कहा, 'मैं यहां पर एक नेक मकसद से आया हूं, उन युवा खिलाड़ियों को देखने आया हूं, उन युवा खिलाड़ियों को एक मंच देने आया हूं के जो वो अपना, अपने परिवार का, अपने राज्य का, अपने देश का नाम इमानदारी से रोशन कर सके। वो मेरे लिए बहुत जरूरी है।'

रसेल की धमाकेदार वापसी, वेस्टइंडीज की इंग्लैंड पर ऐतिहासिक जीत

बारबाडोस । स्टार ऑलराउंडर आंद्रे रसेल ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सफल वापसी की और वेस्टइंडीज ने यहां इंग्लैंड पर चार विकेट की शानदार जीत के साथ दिखाया कि वे अगले साल होने वाले आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप में दमदार प्रदर्शन कर सकते हैं। यह दो साल से अधिक समय में रसेल का पहला अंतरराष्ट्रीय मैच था और 35 वर्षीय प्रतिभाशाली खिलाड़ी ने 14 गेंदों में तीन विकेट और नाबाद 29 रन बनाकर इसे शानदार बना दिया क्योंकि कैरेबियाई टीम ने इंग्लैंड के 171 रनों के अच्छे स्कोर का पीछा करते हुए जीत हासिल की। बारबाडोस के सुरम्य केंसिंग्टन ओवल मैदान पर रन चेज़ सबसे सफल रहा जिसने 2014 में इंग्लैंड के खिलाफ वेस्टइंडीज के 155/5 के पिछले सर्वश्रेष्ठ स्कोर को भी पीछे छोड़ दिया। रसेल को उनकी शानदार व्यक्तिगत वीरता के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया और उन्होंने खेल के बाद स्वीकार किया कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उनकी वापसी बिल्कुल योजना के अनुसार हुई थी। आईसीसी ने मैच के बाद रसेल के हवाले से कहा, जब से मुझे बुलावा आया है तब से दो सप्ताह से मैं सपना देख रहा हूं कि मैं अपने पहले मैच में प्लेयर ऑफ द मैच बनूंगा। मुझे नहीं पता था कि यह कैसे होगा लेकिन मैं बस यह विश्वास करता रहा कि यह होगा।' रसेल ने कहा कि बारबाडोस में पहले खेलने से उन्हें जो ज्ञान मिला है, उससे उन्हें इंग्लैंड पर शिकंजा कसने और तीन मूल्यवान विकेट लेने में मदद मिली। रसेल ने कहा,'कटर यहां अच्छा काम कर रहे हैं, इसलिए मैंने अधिक से अधिक कटर फेंकने और गति को कम करने की कोशिश की क्योंकि इंग्लैंड की पारी की शुरुआत में लगने वाली अधिकांश सीमाएं गति से थीं।

मनिंदर, नितिन और श्रीकांत ने लगाए शानदार सुपर 10, पटना पाइरेट्स को मिली पहली हार

बेंगलुरु। बंगाल वॉरियर्स ने अपने तूफानी प्रदर्शन के दम पर मंगलवार रात यहां बेंगलुरु के श्री कांतिरावा स्टेडियम में पटना पाइरेट्स को 60-42 के बड़े अंतर से हरा दिया। पटना की प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) सीजन-10 में यह पहली हार है। बंगाल वॉरियर्स और पटना पाइरेट्स के बीच इस मुकाबले में कुल 102 पॉइंट हासिल हुए, जोकि पीकेएल के इतिहास में चौथा सबसे बड़ा मैच पॉइंट बन गया। मनिंदर सिंह के 15 पॉइंट, नितिन कुमार के 14 और श्रीकांत जाधव के 12 पॉइंट के दम पर बंगाल वॉरियर्स ने अपना अजेय क्रम जारी रखा जबकि पटना का विजय रथ रोक दिया। इस सीजन की दो अजेय टीमों के बीच का मुकाबला काफी कड़ा रहा। बंगाल वॉरियर्स के मनिंदर सिंह शाम की पहली रेड में ही टैकल कर लिए गए। पाइरेट्स ने अपने डिफेंस के सहारे यह

सुनिश्चित किया कि वे पॉइंट न गंवाएं, जबकि दूसरे छोर पर सचिन पॉइंट लेते रहे और उन्होंने स्कोरकार्ड को चलाना जारी रखा। लेकिन नितिन कुमार ने शानदार 5 पॉइंट (एक ही रेड में) के साथ सुपर रेड करके पहले हाफ के अंतिम 10 मिनट में मैच का रुख बदल दिया। वॉरियर्स ने फिर तीन अंकों की बदौलत एक पॉइंट की बढ़त बना ली। तीन मिनट के अंदर ही एक बड़ा उलटफेर हुआ, जब बंगाल वॉरियर्स ने मुकाबले में पहली बार पटना को ऑल आउट कर दिया और 16-11 की बढ़त हासिल कर ली। दूसरे हाफ की शुरुआत में पटना पाइरेट्स की टीम 11 पॉइंट से पीछे थी। हालांकि थोड़ी वापसी के बावजूद, जल्द ही उसे दूसरी बार ऑल आउट का सामना करना पड़ा।

बंगाल वॉरियर्स ने फिर 34-22 की शानदार बढ़त बना ली। इसी बीच, मनिंदर और जाधव ने अपना सुपर 10 पूरा कर लिया। वॉरियर्स ने फिर मैच के अंतिम मिनटों में तीसरी बार पटना की टीम को ऑल आउट कर दिया और 18 पॉइंट की बड़ी जीत के साथ पाइरेट्स का विजय रथ रोक दिया।

सउदी अरब में दो मैच खेलेगी इंटर मियामी, एक फरवरी को मेस्सी और रोनाल्डो की टक्कर

फोर्ट लॉडरडेल (अमेरिका) । दुनिया भर के फुटबाल प्रेमियों को जिस मुकाबले का इंतजार था, वह एक फरवरी को सउदी अरब में होगा जब लियोनेल मेस्सी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीमें आमने-सामने होंगी।

मेस्सी की टीम इंटर मियामी ने पुष्टि की कि वह सउदी अरब में रियाद सीजन कप खेलेगी। उसका सामना अल हिलाल से 29 जनवरी को और रोनाल्डो की टीम अल नासर से एक फरवरी को होगा। सउदी प्रो लीग में ये दोनों क्लब शीर्ष पर हैं और रोनाल्डो लीग में सर्वाधिक गोल कर चुके हैं।

इंटर मियामी के खेल निदेशक क्रिस हेंडरसन ने कहा, 'इन मैचों से हमें नये सत्र की तैयारी में मदद मिलेगी । अल हिलाल और अल नासर जैसी मजबूत टीमों के खिलाफ हमें खुद को आजमाने का मौका मिलेगा। मेस्सी और रोनाल्डो क्लब और अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल में 35 बार आमने सामने रहे हैं जिनमें से मेस्सी की टीम ने 16 और रोनाल्डो की टीम ने 10 मैच जीते हैं जबकि नौ मैच ड्रॉ रहे।

इन मैचों में मेस्सी ने 21 गोल किए और 12 में सहायक रहे जबकि रोनाल्डो ने 20 गोल किए और एक में सहायक रहे। मेस्सी ने मई में सउदी अरब पर्यटन के प्रचार के लिए एक कार्यक्रम में हिस्सा लिया था जिसकी वजह से उनकी पूर्व टीम पेरिस सेंट जर्मेन ने उन्हें निलंबित कर दिया था। मेस्सी और रोनाल्डो क्रमशः बार्सीलोना और रीयाल मैड्रिड के लिये भी कई बार एक दूसरे के खिलाफ खेल चुके हैं।

टीपीएल 5 : पहले दिन बंगाल विजार्ड्स और गुजरात पैंथर्स शीर्ष पर

पुणे। खिलयर द्वारा संचालित टेनिस प्रीमियर लीग (टीपीएल) के सीजन-5 का पहला दिन मंगलवार को ब्लॉकबस्टर मैचों के साथ समाप्त हुआ। मैच पुणे के शानदार बालेवाड़ी स्टेडियम में एक भव्य उद्घाटन समारोह के बाद शुरू हुए, जिसमें भारत में पहली बार चारकोल रंग के कोर्ट पर मैच खेले गए। दिन का पहला मैच बंगाल विजार्ड्स और हैदराबाद स्ट्राइकर्स के बीच खेला गया। मैच की शुरुआत महिला एकल वर्ग से हुई। बंगाल विजार्ड्स की मारिया टिमोफीवा ने हैदराबाद स्ट्राइकर्स की एलेन पेरेज़ का सामना किया, जो 10-ऑल पर ड्रॉ समाप्त हुआ।

मैच के बाद पुरुष एकल वर्ग के मैच में बंगाल विजार्ड्स के श्रीराम बालाजी और हैदराबाद स्ट्राइकर्स के निकी पूनाचा का सामना हुआ, जिसमें श्रीराम बालाजी 16-4 के स्कोर के साथ विजयी रहे। अगली कटेगरी मिश्रित युगल थी, जिसमें बंगाल विजार्ड्स की मारिया टिमोफीवा और अनिरुद्ध चन्द्रशेखर ने हैदराबाद स्ट्राइकर्स की एलेन पेरेज़ और साकेत माइनेनी से मुकाबला किया, जो 15-5 से हैदराबाद स्ट्राइकर्स के पक्ष में समाप्त हुआ। आखिरी कटेगरी पुरुष युगल थी, जिसमें बंगाल विजार्ड्स के श्रीराम बालाजी और अनिरुद्ध चंद्रशेखर को हैदराबाद स्ट्राइकर्स के साकेत माइनेनी और निकी पूनाचा के खिलाफ देखा गया। वह मैच 15-5 से बंगाल विजार्ड्स के पक्ष में समाप्त हुआ। इस तरह यह मैच बंगाल विजार्ड्स के हक में 46-34 से समाप्त हुआ। बंगाल विजार्ड्स के श्रीराम बालाजी को मुकाबले में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। दिन के दूसरे मैच में घरेलू टीम पुणे जगुआर्स का

मुकाबला दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड से हुआ। मैच की शुरुआत महिला एकल वर्ग से हुई। पुणे जगुआर्स की डायना मार्सिकेविका का मुकाबला दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड की सहजा यमलापल्ली से हुआ, जो 12-8 से डायना के पक्ष में रहा। इसके बाद पुरुष एकल वर्ग में पुणे जगुआर्स के लुकास रोसोल और दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड के डेनिस नोवाक के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें नोवाक 13-7 से विजयी रहे। अगली कटेगरी मिश्रित युगल की, जिसमें पुणे जगुआर्स की डायना मार्सिकेविका और ऋत्विक बोलिपल्ली का मुकाबला दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड के सहजा यमलापल्ली और जीवन नेदुनचेझियान से हुआ, जो 10-ऑल ड्रॉ पर समाप्त हुआ। आखिरी कटेगरी पुरुष युगल थी, जिसमें पुणे जगुआर्स के ऋत्विक बोलिपल्ली और लुकास रोसोल को दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड के जीवन नेदुनचेझियान और डेनिस नोवाक के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। यह मैच 11-9 से दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड के पक्ष में समाप्त हुआ। दिल्ली चिन्नी ब्रिगेड ने पुणे जगुआर्स को पछाड़ते हुए मैच 42-38 से जीत लिया। पुणे की डायना मार्सिकेविका को प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। दिन के तीसरे मैच में पंजाब पैट्रियट्स का मुकाबला बेंगलुरु एसजी मावेरिक्स से हुआ। मैच की शुरुआत महिला एकल मुकाबले से हुई। पंजाब पैट्रियट्स की कोनी पेरिन ने बेंगलुरु एसजी मावेरिक्स की अरीना रोडियोनोवा से मुकाबला किया, जो स्विस खिलाड़ी के पक्ष में 13-7 से समाप्त हुआ।

टी20 मैचः दक्षिण अफ्रीका ने भारत को 5 विकेट से हराया

नई दिल्ली। सेंट जॉर्ज पार्क स्टेडियम में खेल गए तीन टी20 मैचों की सीरीज के दूसरे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका ने भारत को पांच विकेट से हरा दिया है। इस जीत के साथ साउथ अफ्रीका की टीम ने सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली।

वर्षा प्रभावित मुकाबले में मेजबानों को डकवर्थ लुईस नियम से 152 रनों का लक्ष्य मिला था, जो उसने 13.5 ओवरों में ही हासिल कर लिया। दक्षिण अफ्रीका की तरफ से रीजा हेंड्रिक्स ने 49, कप्तान मार्करम ने 39 और डेविड मिलर ने 17 रन पारी खेली जबकि ट्रिस्टियन स्टब्बस (नाबाद 14) और फेहलुक्वायो (10) ने नाबाद रहे। वहीं भारत के लिए मुकेश कुमार को सबसे ज्यादा 2 विकेट मिले जबकि सिराज और कुलदीप एक-एक सफलता मिली। इससे पहले भारत की शुरुआत बहुत ही खराब रही। टीम के दोनों ओपनर जायसवाल (0) और शुभमन

गिल (0) बिना खाता खोले ही आउट हो गए। यहां से युवा तिलक वर्मा (29) ने अच्छी लय दिखाई, तो सूर्यकुमार यादव (56) ने दिखाया कि वह दक्षिण अफ्रीकी पिचों पर भी प्रहार करना जानते हैं लेकिन दिल जीता एक बार फिर से रिंकू सिंह (68) ने जिन्होंने बारिश से मैच रुकने तक एक छोर न केवल थामे रखा बल्कि तेज गति से रन बनाते हुए 19.3 ओवरों में स्कोर को 7 विकेट पर 180 तक पहुंचाया।लेकिन आखिरी तीन गेंद फिंकने से पहले बारिश आ गई और खिलाड़ियों को वापस लौटना पड़ा। दक्षिण अफ्रीका की तरफ से गेराल्ड कोइट्जी ने तीन विकेट लिए जबकि तबरेज शम्सी, एन जॉनसन और एलश्री विलियमसन को एक-एक सफलता मिली। उल्लेखनीय है कि भारत और साउथ अफ्रीका के बीच तीन टी20 मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला रविवार को डरबन में खेला जाना था, लेकिन बारिश के कारण रद्द कर दिया गया था।

आईसीसी ने मीरपुर की पिच को असंतोषजनक करार दिया

दुबई। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मीरपुर के शेरे बांग्ला नेशनल स्टेडियम में बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के बीच खेले गए आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप श्रृंखला के दूसरे टेस्ट की पिच को आईसीसी पिच और आउटफील्ड निगरानी प्रक्रिया के तहत असंतोषजनक करार दिया है।आईसीसी मैच रेफरी डेविड बून ने मैच अधिकारियों की चिंताओं को व्यक्त करते हुए और दोनों टीमों के कप्तानों से परामर्श करने के बाद आईसीसी को अपनी रिपोर्ट सौंपी। मूल्यांकन के बाद, आयोजन स्थल को एक डिमेरिट अंक प्राप्त हुआ है।

रिपोर्ट बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) को भेज दी गई है, जिसके पास अब प्रतिबंध के खिलाफ अपील करने के लिए 14 दिन का समय है। बून ने कहा, आउटफ़ील्ड बहुत अच्छी थी और बारिश के साथ बहुत अच्छी तरह से टिकी हुई थी। हालाँकि, ऐसा प्रतीत हुआ कि पिच शायद कम तैयार थी,

क्योंकि यह सख्त नहीं थी और पहले दिन घास की कतरनों से ढकी हुई थी। पहले सत्र के बाद से, पूरे मैच के दौरान उछाल असंगत था और कई गेंदें सतह से टकरा रही थीं। आगे खेलते समय स्पिन गेंदबाजों की गेंदें अक्सर बल्लेबाज के कंधे के ऊपर से निकल जाती थीं, और फिर कभी-कभी बहुत नीचे रह जाती थीं। मैच की बात करें तो इस मुकाबले में न्यूजीलैंड ने बांग्लादेश को 4 विकेट से हराकर सीरीज 1-1 से बराबर कर ली है। मैच में बांग्लादेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 172 रन बनाए, जवाब में न्यूजीलैंड की टीम ने पहली पारी में 180 रन बनाए और 08 रन की बढ़त हासिल की। बांग्लादेश की टीम दूसरी पारी में सिर्फ 144 रन ही बना सकी और न्यूजीलैंड को जीत के लिए 137 रनों का लक्ष्य मिला, जोकि न्यूजीलैंड की टीम ने मैच के चौथे दिन 38 ओवर में 6 विकेट पर 138 रन बनाकर जीत हासिल की।

'उसके लिए माफी मांगता हूं', मीडिया बॉक्स का शीशा तोड़ने पर बोले रिंकू सिंह

डरबन। रिंकू सिंह ने दूसरे दक्षिण अफ्रीका-भारत टी20आई मैच के अंतिम ओवर में एडेन मार्करम पर लगातार दो छक्के मारे जिनमें से दूसरे शॉट ने गकेबरहा में सेंट जॉर्ज पार्क की प्रेस-बॉक्स की खिड़की को तोड़ दिया। जब रिंकू को मैच के बाद इस बारे में पता चला तो उन्होंने इसे लेकर माफी मांगी है। तीन मैचों की श्रृंखला के दूसरे टी20आई मैच में दक्षिण अफ्रीका ने रोमांचक मुकाबले में जीत दर्ज की।

मैच के बाद रिंकू ने कहा, 'जब मैं बल्लेबाजी करने गया तो टीम के दो आउट हो गए थे। जब सूर्या भाई के साथ मैं खेल रहा था तो यह बात हो रही थी तो उन्होंने कहा, तू जैसे खेल रहा है वैसे ही अपना गेम खेल।' रिंकू ने कहा, 'इसके बाद मैंने थोड़ा टाइम लिया क्योंकि शुरू में विकेट समझने में मुश्किल हो रही थी। इसके बाद जब मैं सेट हुआ तो शॉट खेलने शुरू किए। उन्होंने मुझे बोला कि जैसे बोला वैसे ही खेल और अपने पर विश्वास रख।' प्रेस-बॉक्स की खिड़की तोड़ने पर रिंकू ने कहा, जब मैंने शॉट मारा छक्का मारा तो मुझे पता नहीं था कि शीशा टूटा हुआ है, जब आप आए तो पता चला। उसके लिए माफी मांगता हूं। टॉस हारने के बाद भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 रन पर दो विकेट गंवा दिए। दोनों ओपनर यशस्वी जायसवाल

और शुभमन गिल शून्य पर आउट हो गए। इसके बाद भारतीय पारी को कप्तान सूर्यकुमार यादव और रिंकू सिंह ने संभाला और

रिंकू ने कहा, 'इसके बाद मैंने थोड़ा टाइम लिया क्योंकि शुरू में विकेट समझने में मुश्किल हो रही थी। इसके बाद जब मैं सेट हुआ तो शॉट खेलने शुरू किए।

अर्धशतक जड़े। रिंकू सिंह जब क्रीज पर आए तब स्कोर 55-3 था। भारत ने 9 गेंदों के अंतराल में सूर्यकुमार यादव और जितेश शर्मा को खो दिया, लेकिन रिंकू ने अपने शॉट्स खेलना जारी रखा और अंततः 30 गेंदों पर अपना पहला टी20आई अर्धशतक पूरा किया। रिंकू ने 39 गेंदों पर 68 रन बनाए जिसमें 9 चौके और 2 छक्के शामिल थे जबकि सूर्यकुमार ने 36 गेंदों पर 5 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 56 रन की पारी खेली जिससे भारत 180/7 का स्कोर बना सका।

इसके जवाब में रीजा हेंड्रिक्स (49) और मैथ्यू ब्रीट्जके (16) ने टीम को अच्छी शुरूआत दी। एडेन मार्करम और हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर) वैसा खेल नहीं दिखा पाए जैसी उनसे उम्मीद की जाती है लेकिन दक्षिण अफ्रीका की टीम रन चेज के दौरान कभी भी दुविधा में नजर नहीं आई। दक्षिण अफ्रीका ने 13.5 ओवर में 154/5 का स्कोर बनाया और डीएलएस नियम के तहत मैच को 5 विकेट से जीत लिया।

सूर्यकुमार यादव के टी20 में 2 हजार रन पूरे, इस दिग्गज का रिकॉर्ड किया बराबर

नई दिल्ली। भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने गकेबरहा के मैदान पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेले गए दूसरे टी20 मुकाबले में 15 रन पर पहुंचते ही टी20 इंटरनेशनल में अपने 2000 रन पूरे कर लिए। सूर्यकुमार ने इस रिकॉर्ड को हासिल करने के लिए महज 56 पारियां ली हैं। ऐसा कर उन्होंने विराट कोहली का रिकॉर्ड बराबर कर लिया है। यही नहीं, सूर्यकुमार भारत के लिए टी20 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले चौथे बल्लेबाज भी बन गए हैं। टी20 इंटरनेशनल में भारत की ओर से सबसे ज्यादा रन विराट कोहली ने बनाए हैं। भारतीय सितारा ने 107 पारियों में यह रिकॉर्ड अपने नाम किया था। इसके बाद 140

पारियों में 3853 रन बनाकर रोहित शर्मा दूसरे नंबर पर बने हुए हैं। रोहित के नाम टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा शतक लगाने का भी रिकॉर्ड है। इस लिस्ट में तीसरे नंबर पर 68 पारियों में 2256 रन के साथ केएल राहुल है जबकि अब सूर्यकुमार 56 पारियों में दो हजार रन बनाकर चौथा स्थान हासिल कर लिया है। टी20 इंटरनेशनल में सबसे कम पारियों में दो हजार रन बनाने का रिकॉर्ड पाकिस्तान के बाबर आजम और मोहम्मद रिजवान के नाम पर है। दोनों बल्लेबाजों ने 52-52 पारियों में यह रिकॉर्ड बनाया था। इसके बाद विराट कोहली का नाम है जिन्होंने 56 पारियों में ऐसा किया था। इस लिस्ट में सूर्यकुमार ने विराट की बराबरी कर ली है। इस लिस्ट में चौथे स्थान पर केएल राहुल हैं जिन्होंने 58 पारियों में 2 हजार रन बनाए थे। मैच की बात करें तो टीम इंडिया को टॉस गंवाने के बाद पहले बल्लेबाजी मिली थी। यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल बिना खाता खोले आउट हो गए। तिलक ने कुछ अच्छे शॉट लगाए लेकिन वह भी 20 गेंदों पर 29 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद सूर्यकुमार ने कप्तानी पारी खेलते हुए अर्धशतक लगाकर टीम इंडिया को 100 रन से पार लगाया। सूर्यकुमार का दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 5 पारियों में चौथा अर्धशतक था।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

भारतः यशस्वी जयसवाल, शुबमन गिल, तिलक वर्मा, सूर्यकुमार यादव (कप्तान), रिंकू सिंह, जितेश शर्मा (डब्ल्यू), रवींद्र जड़ेजा, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, अर्शदीप सिंह, मुकेश कुमार

दक्षिण अफ्रीका : मैथ्यू ब्रीट्जके, रीज़ा हेंड्रिक्स, एडेन मार्करम (कप्तान), हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), डेविड मिलर, ट्रिस्टन स्टब्स, मार्को जानसन, एंडिले फेहलुक्वायो, गेराल्ड कोएत्ज़ी, लिज़ाद विलियम्स, तबरेज़ शम्सी

टेस्ट मानसिकता में ढलने के लिए टीम को कोच अमोल मजूमदार के अनुभव पर भरोसाः मंधाना

नवी मुंबई । लंबे समय के बाद टेस्ट मैच खेलने को तैयार भारतीय महिला टीम की उप कप्तान स्मृति मंधाना ने मंगलवार को यहां कहा कि उनकी युवा टीम के साथी इंग्लैंड के खिलाफ लाल गेंद प्रारूप के इस मैच की मानसिकता में ढलने के लिए नए मुख्य कोच अमोल मजूमदार से सीखने की कोशिश कर रहे हैं। भारत ने दो साल पहले जून और सितंबर में क्रमशः इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया में एक-एक टेस्ट खेला था। यह दोनों चार दिवसीय मुकाबले ड्रा रहे थे। भारत की तुलना में इंग्लैंड को लाल गेंद से क्रिकेट खेलने का हालिया अनुभव ज्यादा है। टीम ने इस साल जून में महिला एशेज में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट खेला था। अपने एक दशक लंबे करियर में सिर्फ चार टेस्ट खेलने वाली मंधाना का मानना है कि गुरुवार से यहां शुरू होने वाले चार दिवसीय मुकाबले से पहले घरेलू क्रिकेट के पूर्व दिग्गज और कप्तान मजूमदार की उपस्थिति टीम के लिए काफी महत्वपूर्ण है। मंधाना ने भारतीय टीम के अभ्यास सत्र से पहले कहा, 'हमारे पास अमोल सर के रूप में एक अनुभवी कोच है। उन्हें रणजी ट्रॉफी में खेलने का आपार अनुभव है। वह चार दिवसीय मैच खेलने के आदी रहे है।' उन्होंने कहा, 'हमारी टीम में दो-तीन खिलाड़ियों को मिलाकर जितना अनुभव है उससे ज्यादा अनुभव उन्हें है। मैं देख सकती हूं कि टीम की कई खिलाड़ी उनसे मानसिकता के बारे में पूछ रही थी।' भारतीय खिलाड़ी पिछले दो साल से टेस्ट क्रिकेट से दूर हो लेकिन टीम ने मजूमदार की देखरेख में अक्टूबर में चार दिवसीय मैच का अभ्यास किया था। बेंगलुरु में अभ्यास शिविर के दौरान टीम ने आपस में ही चार दिवसीय मैच खेला था।

ACTION INDIA

एक्शन इंडिया

RKB GROUP Rakesh Bhardwaj Group

Front Page - 2

एक्शन इंडिया ▸ देहरादून ▸ 14 दिसंबर 2023 ▸ पृष्ठ 08 ▸ आरएनआई: UTTHIN / 2009 / 31653

फास्ट न्यूज

नागपुर में विधानभवन की सुरक्षा बढ़ाई गई, विधायकों को मिलेंगे सिर्फ दो विजिटर पास

मुंबई। दिल्ली में संसद की सुरक्षा चूक के मद्देनजर नागपुर में विधानभवन की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा कि अब सिर्फ विधायकों को दो विजिटर पास मिल सकेंगे। दिल्ली में संसद की सुरक्षा चूक के बाद पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस विधायक पृथ्वीराज चव्हाण ने विधानसभा में सुरक्षा व्यवस्था का मुद्दा उठाया। उन्होंने राज्य सरकार से सावधान रहने और सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाए जाने की भी मांग की। इसके बाद उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने कहा कि विधानसभा और विधानपरिषद के सदस्यों को अधिकतम दो विजिटर पास दिए जाने चाहिए। विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा कि मैंने पहले भी सदस्यों से अधिक से अधिक दो विजिटर पास लेने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि अब किसी भी विधायक को सिर्फ दो विजिटर पास दिए जाएंगे। इसका कठोरता से पालन करना जरूरी है। विधानपरिषद की सभापति नीलम गोरहे ने भी विधानपरिषद के सदस्यों को सिर्फ दो विजिटर पास दिए जाने की घोषणा की। इसके साथ ही नागपुर में विधान भवन की भी सुरक्षा बढ़ाई गई है।

एमी पुरस्कार विजेता अभिनेता आंद्रे ब्रूघेर का निधन

मुंबई। नेटफ्लिक्स पर लोकप्रिय सीरीज 'ब्रुकलिन नाइन-नाइन' में 'कैप्टन रे होल्ट' की भूमिका निभाने वाले अभिनेता आंद्रे ब्रूघेर का निधन हो गया है। उनकी टीम ने उनके निधन की खबर की पुष्टि की है। अभिनेता आंद्रे ब्रूघेर को वेब सीरीज 'होमिसाइड : लाइफ ऑन द स्ट्रीट' और 'ब्रुकलिन नाइन-नाइन' में उनकी भूमिकाओं के लिए जाना जाता है। उन्होंने प्रतिष्ठित एमी पुरस्कार भी जीता। उनका 61 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। आंद्रे ब्रूघेर की पब्लिसिस्ट जेनिफर एलन ने मीडिया को एक्टर के निधन की जानकारी देते हुए बताया कि आंद्रे का छोटी बीमारी के बाद निधन हो गया है। आंद्रे का जन्म शिकागो में हुआ था।
उन्होंने वर्ष 1989 में रिलीज हुई फिल्म 'ग्लोरी' से मनोरंजन जगत में कदम रखा। इस फिल्म में उन्होंने मॉर्गन फ्रीमैन और डेनजेल वॉशिंगटन के साथ अहम भूमिका निभाई थी। हॉलीवुड में काम पाने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। उस समय हॉलीवुड में अफ्रीकी अभिनेताओं के लिए बहुत कम भूमिकाएँ थीं। आंद्रे ब्रूघेर ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था कि काम मिलने में काफी दिक्कतें आईं।

लखनऊः ओटीएस में अब तक 2600 करोड़ से ज्यादा की वसूली

बिजली चोरी से जुड़े मामलों में ही 54 हजार से ज्यादा लोगों ने योजना का लाभ प्राप्त किया है तो वहीं विभाग को इसके माध्यम से 180 करोड़ से ज्यादा का राजस्व मिला है।

टीम एक्शन इंडिया/लखनऊ
बिजली उपभोक्ताओं को अपने बकाये की राशि चुकाने के लिए योगी सरकार द्वारा शुरू की गई एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस) न सिर्फ उपभोक्ताओं के लिए बल्कि ऊर्जा विभाग के लिए भी सुपर डुपर हिट साबित हो रही है। 12 दिसंबर तक इस योजना के तहत 27 लाख से ज्यादा रजिस्टर्ड लोगों को लाभ मिला है, जबकि विभाग को 2600 करोड़ से ज्यादा का राजस्व प्राप्त हुआ है। राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि सिर्फ बिजली चोरी से जुड़े मामलों में ही 54 हजार से ज्यादा लोगों ने योजना का लाभ प्राप्त किया है तो वहीं विभाग को इसके माध्यम से 180 करोड़ से ज्यादा का राजस्व मिला है। यह राशि योगी सरकार की इस योजना की सफलता का बड़ा उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। उल्लेखनीय है कि

योगी सरकार ने आठ नवंबर को एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस) की शुरूआत की थी। उपभोक्ताओं ने योजना का लाभ लेने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में अपना पंजीकरण कराया। योजना के तहत दो तरह के लोग इसका लाभ ले रहे हैं। एक ओटीएस नॉर्मल और दूसरा ओटीएस थेफ्ट (जिन पर बिजली चोरी का बकाया है)। यह योजना 08 नवंबर से 31 दिसंबर 2023 तक कुल 54 दिनों तक तीन खंडों में चलाई जा रही है। इस योजना का पहला चरण 08 से 30 नवंबर तक चला है, जबकि अब एक दिसंबर से 15 दिसंबर तक इसका दूसरा चरण चल रहा है। तीसरा चरण 16 दिसंबर से 31 दिसंबर तक चलेगा। प्रवक्ता ने बताया कि बिजली चोरी के मामलों में पांचों डिस्कॉम्स में से सर्वाधिक 17,312 रजिस्ट्रेशन पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम लि. (मेरठ) से हुए हैं, जहां से 50.07 करोड़ रुपये का राजस्व कोष में जमा हुआ है। वहीं, सर्वाधिक 53.78 करोड़ रुपये का राजस्व पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लि. (वाराणसी) से प्राप्त हुआ है, जहां 13,276 उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है। इसके अलावा दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लि. (आगरा) से कुल 14,220 रजिस्टर्ड उपभोक्ताओं के माध्यम से 39.37 करोड़ रुपये, मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लि. (लखनऊ) से 8484 उपभोक्ताओं के जरिए 35.08 करोड़ रुपये और केस्को कानपुर से 1184 उपभोक्ताओं के माध्यम से 2.47 करोड़ रुपये का राजस्व जुटाया गया है। इस तरह पांचों डिस्कॉम्स में कुल मिलाकर 54,476 उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन कराया है, जिनसे कुल मिलाकर 180.77 करोड़ की वसूली हुई है। वहीं सिर्फ 12 दिसंबर को 1626 उपभोक्ताओं ने रजिस्ट्रेशन कराया और विभाग के कोष में 4.05 करोड़ रुपये जमा हो गए।

ओटीएस नॉर्मल में एक दिन में जमा हुए 110 करोड़ रुपयेः ओटीएस नॉर्मल के तहत सर्वाधिक 7,70,718 रजिस्ट्रेशन मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लि. में हुए हैं, जहां से कुल 490.33 करोड़ रुपये की वसूली हुई है। वहीं सर्वाधिक 847.74 करोड़ के राजस्व की प्राप्ति पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम लि. से हुई, जहां कुल 7,65,137 उपभोक्ताओं ने योजना में रजिस्ट्रेशन कराया। दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लि. में 5,99,895 रजिस्टर्ड उपभोक्ताओं से 490.33 करोड़ और पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम लि. से 5,93,036 रजिस्टर्ड उपभोक्ताओं से 618.86 करोड़ रुपये के राजस्व की प्राप्ति हुई है। कुल मिलाकर चारों डिस्कॉम्स से कुल 27,28,786 रजिस्टर्ड उपभोक्ताओं के जरिए विभाग ने 2,615.48 करोड़ रुपये जुटाए हैं।

रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में जोरशोर से जुटी है सरकार

लखनऊ। राम कण-कण में हैं। राम जन-जन में हैं। इस भावना को अंगीकृत करने वाली योगी सरकार वर्तमान के साथ भावी पीढ़ी को भी श्रीराम के आदर्शों एवं मूल्यों से अवगत करा रही है। पांच सौ वर्षों के बाद अयोध्या सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से और समृद्ध दिखेगी, जब 22 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में रामलला अपने जन्मभूमि मंदिर में विराजमान होंगे। इस अवसर को योगी सरकार अद्वितीय, अविस्मरणीय एवं

अलौकिक बनाने में जोरशोर से जुटी है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए नेपाल, कंबोडिया, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों के रामलीला मंडलियों के कलाकार आमंत्रित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, कर्नाटक, सिक्किम, केरल, छत्तीसगढ़, जम्मू कश्मीर, लद्दाख और चंडीगढ़ की मंडली भी श्रीराम के जीवन पर आधारित विभिन्न प्रसंगों की प्रस्तुतियां देगी। तुलसी भवन स्मारक स्थित तुलसी मंच पर देश-विदेश की विभिन्न रामलीलाओं का मंचन प्रस्तावित है। रामलीला मंचन के लिए सरकार की तरफ से दो करोड़ रुपये की धनराशि खर्च की जाएगी।

मोदी ने हिमाचल को फिर दिये 633.75 करोड़ः अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली/ हिमाचल प्रदेश/टीम एक्शन इंडिया
केंद्रीय गृह मंत्रालय ने हिमाचल प्रदेश में पिछले दिनों आए आपदा से लोगों को राहत एवम पुनर्वास हेतु 633.75 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि प्रदान की है। ये पैसे नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फंड से दिए जायेंगे जिसकी जानकारी गृह मंत्रालय ने दी। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर ने केंद्र सरकार के इस मदद को हिमाचल के लिए बेहद जरूरी और लाभदायक बताते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का आभार जताया। श्री ठाकुर ने कहा, "आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सदैव हिमाचल प्रदेश को अपना दूसरा घर माना है और हमेशा हिमाचल के सुख दुख में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे हैं। एक बार फिर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आज हिमाचल प्रदेश में पिछले दिनों आए आपदा से लोगों को राहत एवम पुनर्वास हेतु नेशनल डिजास्टर रिस्पांस फंड के अन्तर्गत ?633.75 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि प्रदान की है। यह राशि आपदा हिमाचल में पुनर्वास व राहत कार्यों में बहुउपयोगी साबित होगी। इस बड़ी मदद के लिए मैं आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी व गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का आभार प्रकट करता हूँ आगे बोलते हुए श्री अनुराग ठाकुर ने कहा ह्न विगत दिनों हिमाचल प्रदेश ने भीषण प्राकृतिक आपदा की मार झेली है मगर केंद्र सरकार ने हिमाचल में कभी भी किसी प्रकार की

आभार

8 हिमाचल के पुनरुत्थान हेतु केंद्र ने फिर दिए 633.75 करोड़ रुपये: अनुराग ठाकुर

कोई कमी नहीं आने दी। प्रदेश की जनता के लिए राहत, पुनर्वास, और हिमाचल को फिर से विकास की पटरी पर दौड़ाने के लिए मोदी सरकार ने हर आवश्यक कदम उठाये। नागरिकों की निकासी के लिए पोंटा साहिब में सेना के 1 पैरा एसएफ और 205 आर्मी एविएशन स्क्वाड्रन की 01 कॉलम भी तैनात की गई थी।
इसके साथ हीं बचाव कार्यों के लिए भारतीय वायु सेना के 02 एमआई-17 वी हेलीकॉप्टर भी तैनात किए गए थे जिससे समय रहते हजारों जानें बचाई जा सकीं। नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी के माध्यम से भी मदद दी गई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला संसद पर 13 दिसंबर 2001 को हुए आतंकी हमले में जान गंवाने वाले सुरक्षाकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

बोरवेल में फंसी प्लास्टिक की बोतल बनी नवजात बच्ची की जीवनरक्षक

टीम एक्शन इंडिया/संबलपुर
ओडिशा में एक बोरवेल में फंसी नवजात बच्ची को पांच घंटों की मशक्कत के बाद बाहर निकाल लिया गया। बोरवेल से बाहर निकालने के बाद बच्ची को एंबुलेंस से संबलपुर के एक अस्पताल में ले जाया गया, जहां उसका चल रहा है। हालांकि, सर्दी के मौसम में बोरवेल में फंसी बच्ची की किसी ने सबसे ज्यादा मदद की है तो वो है 100 वाट का एक साधारण बल्ब। इस बल्ब की गर्मी की वजह से बच्ची जिंदा बच सकी। अधिकारियों ने बताया कि किसी ने बोरवेल में पहले से प्लास्टिक की बोतल फंसी हुई थी। जब किसी ने नवजात बच्ची को बोरवेल के अंदर फेंका तो यह बोतल उसके लिए जीवनरक्षक बन गई। इसकी वजह से उसका सिर दीवार और जमीन से टकराने से बच गया।
उन्होंने बताया कि बच्ची को मंगलवार रात रेंगाली इलाके के

लारीपाली गांव में 20 फुट के खाली पड़े बोरवेल से बचाने के बाद ग्रीन कॉरिडोर में ले जाया गया। इसके बाद इलाज के लिए उसे 60 किलोमीटर दूर संबलपुर शहर के वीर सुरेंद्र साई मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाल रोग विशेषज्ञ डॉ सुभम सिंघा ने कहा कि बच्ची फिलहाल ठीक है। उसके शरीर पर कुछ मामूली चोट के निशान हैं। सर्दी में बोरवेल में गिरे रहने के कारण हाइपोथर्मिया से पीड़ित हो गई थी।

बेगूसराय सदर अस्पताल के जांच में मिली बड़ी गड़बड़ी

बेगूसराय। बिहार के नंबर वन अस्पताल का दर्जा प्राप्त बेगूसराय सदर अस्पताल में कुछ भी ठीक नहीं है। ना यहां जरूरत के मुताबिक डॉक्टर उपस्थित हैं और ना ही जांच के लिए प्रशिक्षित कर्मी। इसका खुलासा बुधवार को निरीक्षण में हुआ है। स्वास्थ्य विभाग के रीजनल एडिशनल डायरेक्टर (आरएओ) डॉ. वीरेन्द्र कुमार के नेतृत्व में पांच सदस्यीय टीम ने बुधवार को बेगूसराय सदर अस्पताल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान स्वास्थ्य सेवा में कई खामियां नजर आई है। जिसे ठीक करने का निर्देश सिविल सर्जन को दिया गया है। मुंगेर रीजनल डायरेक्टर डॉ. वीरेन्द्र कुमार ने बताया कि सदर अस्पताल के ओपीडी, अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे, पैथोलॉजी सहित विभिन्न क्रियाकलापों का निरीक्षण किया है। ओपीडी में दो चिकित्सकों को रहना चाहिए। लेकिन मात्र एक चिकित्सक के रहने से सिस्टम में भारी कमी है। ओपीडी पंजी में चिकित्सक की कमी के कारण सब कुछ सही तरीके से नहीं लिखा जाता है।
आंख विभाग में डॉक्टर नहीं है, सर्जरी में भी कमी है। एनसीडी सेल ठीक है, लेकिन वहां भी सभी मशीन उपलब्ध नहीं है।

कुमाऊं विवि ने घोषित किए परीक्षा परिणाम

नैनीताल। कुमाऊं विवि ने बुधवार को परीक्षा सत्र 2023 में पंजीकृत विद्यार्थियों की बीएससी ऑनर्स-गणित के चौथे व छठे सेमेस्टर तथा एलएलबी के चौथे सेमेस्टर की व्यवसायिक परीक्षाओं के पंजीकृत परीक्षार्थियों के परिणाम घोषित कर दिए हैं। विवि के परीक्षा नियंत्रक की ओर से बताया गया है कि परीक्षा परिणाम विवि की आधिकारिक वेबसाइट केयूएनटीएल डॉट नेट पर लॉग इन करके अथवा अपने परिसर या महाविद्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

कोलकाताः पूर्व विधायक के परिसर पर आयकर के छापे

टीम एक्शन इंडिया/कोलकाता
पश्चिम बंगाल में बुधवार सुबह आयकर विभाग के अधिकारियों ने तृणमूल कांग्रेस के एक पूर्व विधायक और कई अन्य व्यापारियों के परिसरों पर छापेमारी की। आरोप है कि व्यापारियों ने पिछले कई वर्षों से टैक्स का भुगतान नहीं किया है। इसी के चलते उनके आसनसोल, दुगार्पुर और रानीगंज के परिसरों पर छापे

मारे गए। आयकर विभाग के एक अफसर ने कहा, हमारे अधिकारी कल दुगार्पुर पहुंचे थे और बुधवार को सुबह से ही इन व्यापारियों के आवासों की तलाशी शुरू कर दी गई। वे बैंक खातों का ब्योरा और उनकी संपत्ति से जुड़े अन्य विवरण और दस्तावेज तलाश रहे हैं। उन्होंने बताया कि आयकर विभाग के अधिकारी तृणमूल कांग्रेस के पूर्व विधायक सोहराब अली और अन्य व्यापारियों से भी पूछताछ कर रहे हैं। सभी के परिसरों के बाहर बड़ी संख्या में केंद्रीय बल के जवान तैनात हैं।

'हिमाचल को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित किया जाएगा'

टीम एक्शन इंडिया/शिमला
मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने गत दिवस को नई दिल्ली में आयोजित एजेंडा आज तक-2023 कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अगले वर्ष के लिए सरकार का मुख्य एजेंडा हिमाचल को भारत की पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक आपदा से हुई तबाही के बाद युद्ध स्तर पर बहाली का काम किया गया और हिमाचल प्रदेश सर्दियों के मौसम में पर्यटकों के स्वागत के लिए तैयार है। उन्होंने देश-विदेश के पर्यटकों को हिमाचल आने और इसके प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए आमंत्रित किया।
मुख्यमंत्री ने राज्य के लोगों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और राज्य सरकार के प्रमुख निर्णयों और नीतियों के बारे में भी विस्तार से बताया।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री का पद संभालने के बाद उनका पहला काम राज्य की वित्तीय स्थिति को सुधारना था। उन्होंने कहा कि उचित वित्तीय प्रबंधन सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए हैं और राज्य की वित्तीय स्थिति में सुधार करते हुए जल्द ही इसमें सकारात्मक बदलाव देखा जाएगा। उन्होंने दस वर्षों के भीतर हिमाचल को देश का सबसे समृद्ध राज्य बनाने की परिकल्पना को साकार करने की प्रतिबद्धता भी दोहराई। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने अपने पहले साल में तीन गारंटियां पूरी की हैं और बाकी गारंटियां आगामी चार सालों में चरणबद्ध तरीके से पूरी की जाएंगी। पुरानी पेंशन योजना मानवीय आधार पर लागू की गई, ताकि कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन सुरक्षित हो सके।
680 करोड़ रुपये की राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्ट-अप योजना के पहले चरण में ई-टैक्सी योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत, राज्य सरकार युवाओं को ई-टैक्सी की खरीद पर 50 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान कर रही है जिससे राज्य में हरित ऊर्जा को बढ़ावा मिलेगा तथा उनको एक निश्चित आय भी सुनिश्चित होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अगले सत्र से सभी सरकारी संस्थानों में अंग्रेजी माध्यम शुरू किया जाएगा। 4,000 अनाथ बच्चों को चिल्ड्रन ऑफ द स्टेट के रूप में अपनाया है तथा उनके कल्याण के लिए देश में पहली बार कानूनन हक देते हुए मुख्यमंत्री सुख.आश्रय योजना शुरू की जिसके तहत, राज्य सरकार इन बच्चों की 27 वर्ष की आयु पूरी होने तक उनकी देखभाल और उच्च शिक्षा के लिए उचित सहायता प्रदान कर रही है मुख्यमंत्री ने कहा कि लाहौल-स्पीति जिला की 18 वर्ष से अधिक आयु की सभी महिलाओं को जनवरी, 2024 से 1500 रुपये प्रदान किए जाएंगे।